।। ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः।।

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष : 11 अंक : 129 जोधपुर : हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका फरवरी– 2019 30/–प्रति

''प्रत्येक मनुष्य के अंदर भगवान् बसता है, और उसे अभिव्यक्त करना ही 'दिव्य–जीवन' (Divine Life) का लक्ष्य है और यह कार्य हम सब कर सकते हैं।''

–महर्षि श्री अरविन्द

''संजीवनी मंत्र से विश्व शांति के रास्ते की सभी रूकावटों का समाधान संभव है।''

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

File Photo

www.the-comforter.org

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें।(अपने घर बैठे ही)

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

जोधपुर आश्रम में बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन) की पूजा-अर्चना और ध्यान कर बरसी पर्व मनाया गया। (1 जनवरी 2019)

बालेसर आश्रम में बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन) की पूजा-अर्चना और ध्यान कर बरसी पर्व मनाया गया। (1 जनवरी 2019)

"ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः"

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

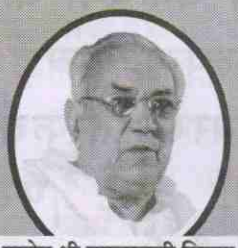

गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

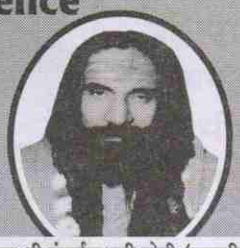

बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन)

वर्ष : 11 अंक : 129 जोधपुर:- हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका फरवरी – 2019

वार्षिक 300/– द्विवार्षिक : 600/– आजीवन (11 वर्ष) : 3000/– मूल्य 30/–

संस्थापक एवं संरक्षक :
पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलालजी सियाग
(ब्रह्मलीन)

सम्पादक :
रामूराम चौधरी

कार्यालय :
Spiritual Science
पत्रिका
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र

पो.बॉक्स नं.41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत

9784742595

E-mail :
spiritualscienceavsk@gmail.com

Ashram :
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Near Hotel Leriya,
Chopasani, JODHPUR (Raj.)
INDIA - 342 003
☎ +91 0291-2753699
Mob. : +91 9784742595
e-mail :
avsk@the-comforter.org
Website :
www.the-comforter.org

अनुक्रम

सद्गुरुदेव की दिव्य वाणी....4
मार्ग की कठिनाइयाँ (सम्पादकीय)....5
आध्यात्मिक सत्संग?....6–7
सद्गुरुदेव का प्रवचन....8
Religious Revolution in the World....9
कल्कि अवतार....10
हृदय मंथन....11
योग के बारे में....12
योग के आधार....13
योगियों की आत्मकथा....14
विरोधी शक्तियों का प्रतिरोध....15
मनुष्य और विकास....16
मेरे गुरुदेव....17
चित्र पृष्ठ....18–23
अनुभूतियाँ तथा रोगों व नशों से मुक्ति....24–33
अवतार की संभावना और हेतु....34
दिव्य प्रेम....35
ईश्वर के पाँच कार्य....36
सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से....37
ध्यान विधि....38

www.the-comforter.org

सद्गुरुदेव की दिव्य वाणी

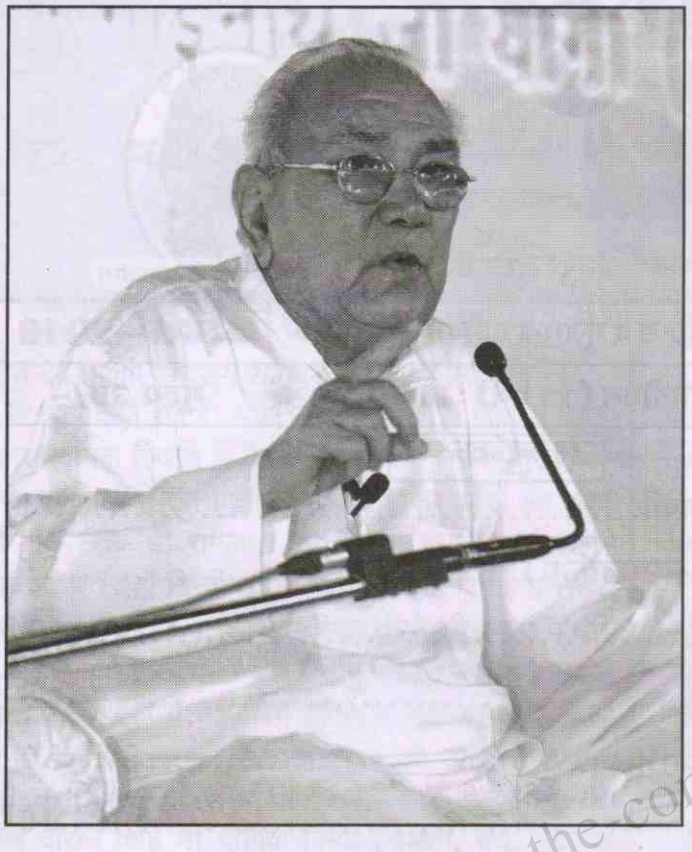

-हिन्दू धर्म में कल्पना की कोई गुँजाइश नहीं है। कल्पना करवाई जा रही है, मुझे मालूम है। मगर एक तरफ तो हमारा दर्शन कहता है, वह परमतत्त्व कल्पनातीत है, फिर कैसी कल्पना ? आज तो हमने हिन्दू धर्म को बहुत संकीर्ण दायरे में कैद कर लिया है। हिन्दू धर्म तो ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' के सिद्धांत में विश्वास रखता है। मनुष्य मात्र को ईश्वर की संतान मानता है।

वैदिक वाक्य है-''सर्वं खाल्विदं ब्रह्म''-जो कुछ दीख रहा है, वह एक ही परमसत्ता का विराट स्वरूप हैं, विभिन्न रूपों में वो ही वो है और कुछ है ही नहीं ! ये दर्शन है, वास्तव में।

-संसार की कोई भी शक्ति, इस धर्म के उत्थान को नहीं रोक सकेगी, किसी में वो सामर्थ्य नहीं हैं।

-हिन्दू, कभी धर्म परिवर्तन में विश्वास नहीं रखता है। वो तो मनुष्य के रूपान्तरण की बात करता है, मनुष्य के परिवर्तन की बात बताता है। मैं तो कहता हूँ कि आप जिस धर्म में हो, उसी में बने रहिए।

-आप जन्म से पूर्ण हो, आपको इसकी जानकारी नहीं है। मैं कुछ नहीं दूँगा आपको ! मैं तो आराधना का एक तरीका बताता हूँ, उससे आप अपनी असलियत जान जाओगे, आप क्या हो ? देने-लेने के लिए किसी के पास कुछ नहीं है, बाहर से आपको उम्मीद करने की आवश्यकता ही नहीं है। जो कुछ है, अंदर हैं, उसको चेतन करने का एक तरीका है।

-यह एक क्रियात्मक परिवर्तन है। गुरु एक तरीका बताता है, जिससे साधक आराधना करनी शुरू करता है, तो उसमें परिवर्तन आना शुरू हो जाता है।

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

"साधना पथ पर मार्ग की कठिनाइयाँ"

आध्यात्मिक पथ पर चलनेवाले सभी व्यक्तियों को पथ की कठिनाइयों और परीक्षाओं का सामना करना पड़ता है; इनमें कुछ तो उनकी अपनी प्रकृति के तथा कुछ बाहर की परिस्थितियों के फलस्वरूप सामने आती हैं। प्रकृति की कठिनाइयाँ तब तक बार-बार आती रहेगी, जब तक तुम उन पर विजय न प्राप्त कर लोगे। इनका सामना करने के लिए धैर्य और शक्ति दोनों की आवश्यकता है। पर परीक्षाओं एवं कठिनाइयों के उत्पन्न होने पर व्यक्ति की प्राणिक सत्ता अवसाद की ओर झुक जाती है।

यह किसी एक के साथ विशेषकर नहीं हुआ है, सभी साधकों के साथ ऐसा ही होता है। यह साधना सम्बन्धी अयोग्यता का द्योतक नहीं है, न ही यह असहायता की भावना को उचित ठहराता है किन्तु आराधनाशील साधक को अवसादरूपी प्रतिक्रिया को जीतने के लिए सद्गुरुदेव द्वारा बताए मंत्र का सघन जाप व नियमित ध्यान करना चाहिए और सहायता के लिए समर्थ सद्गुरुदेव की दिव्य शक्ति का आह्वान करना चाहिए।

सभी जो इस पथ पर दृढ़ता से चलते रहते हैं, अपने आध्यात्मिक भविष्य के संबंध में विश्वस्त रह सकते हैं। यदि कोई लक्ष्य तक पहुँचने में असफल रहता है तो उसका दो में से कोई एक कारण होता है या तो वह इस मार्ग को ही छोड़ देता है या किसी महत्त्वाकांक्षा, अहंकार अथवा कामना के प्रलोभन में पड़कर भगवान् पर अपनी सच्ची निर्भरता से विचलित हो जाता है।

आराधना काल में साधक को विभिन्न प्रकार की सिद्धियाँ हो जाती हैं। साधक को किसी भी सिद्धि की तरफ ध्यान नहीं देना चाहिए, क्योंकि सिद्धियाँ पथ से डिगाने वाली परियाँ होती हैं, जो साधक को चकनाचूर कर देती हैं।

जिस प्रकार हम यात्रा करते हैं, तब हमारी यात्रा के दौरान हम कितने स्टेशनों, भव्य मंदिरों व अन्य स्थलों से गुजरते हैं लेकिन हमारा लक्ष्य तो अंतिम ध्येय तक जाना होता है, इसलिए चाहे हम बस, ट्रेन, कार या किसी भी वाहन में बैठे हैं, केवल दृष्टा भाव से देखते रहते हैं, किसी भी प्रकार की क्रिया नहीं करते हैं, ठीक उसी प्रकार साधक को बिना किसी घमण्ड के, केवल दृष्टा बनकर आध्यात्मिक यात्रा करनी चाहिए।

अहम किसी भी प्रकार का घातक ही होता है। चाहे वह धार्मिक, सामाजिक या आध्यात्मिक हो। जितने भी संतों के अनुभव हैं उनके अनुसार आध्यात्मिक अहम सबसे घातक होता है। इसलिए साधक को सद्गुरुदेव से प्रार्थना करते हुए, बिना किसी लोभ, लालच के, निरन्तर सद्गुरुदेव द्वारा बताई हुई आराधना को करते रहना चाहिए।

किसी भी आध्यात्मिक पुरूष के पीछे भी गादी व उसकी शक्ति को हड़पने की होड़ लगी रहती है। जबकि आध्यात्मिक पुरूष के कार्य की भौतिक रूप से चिंता करने की जरूरत नहीं होती है क्योंकि वह परम शक्ति अपने योग्य शिष्य को अपने आप ढूढ़ लेती है। वह शक्ति किसी भी अन्य से किसी भी प्रकार की कोई सलाह मशविरा नहीं करती है।

आज ऐसे बहुत से शिष्य है जो छोटी छोटी सिद्धियों के कारण व्यर्थ में भटक रहे हैं। सिद्धियों के संबंध में पूज्य सद्गुरुदेव ने अपने कर कमलों से एक पृष्ठ लिखकर दिया था जिसमें स्पष्ट लिखा है कि साधक को सिद्धियों के चक्र में नहीं पड़ना चाहिए।

जो गुरु के चरणों की धूली जितना अपने आपको समझता है उसी में सार्थकता है। इस मिशन के प्रसार-प्रचार में भी एक सच्चे प्रचारक को हमेशा, गुरुदेव की शक्ति को ही सर्वोच्च मानकर, अपने आपको तो केवल एक पोस्टमैन की भूमिका निभानी चाहिए।

किसको यह ज्ञान देना है और किसको नहीं, इसका फैसला वह दिव्य शक्ति अपने आप कर लेगी।

गुरुदेव श्री सियाग अपने प्रवचन में हमेंशा एक ही बात कहते हैं कि "केवल नाम जपो, नाम जप से परिवर्तन आएगा।" साधक को अपनी होशियारी से फालतु के नियम कानून कायदे व अन्य आराधना की पद्धतियों को नहीं अपनाना चाहिए। उससे साधकों में व्यर्थ की भ्रांतियाँ फैलती हैं।

-संपादक

आध्यात्मिक सत्संग ?

समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

इस युग में आध्यात्मिक सत्संग का सही अर्थ प्रायः लुप्त हो चला है। भजन, कीर्तन, कथा, उपदेश आदि सत्संग के कई प्रकार, इस समय संसार में प्रचलित हैं। **सत्संग का सीधा साधा अर्थ है, सत्य का साथ करना।** केवल ईश्वर ही सत्य है बाकी दृश्य जगत् सारा नाशवान है। अतः जिसके संग के कारण उस परमतत्त्व परब्रह्म परमात्मा, सच्चिदानन्दघन की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार हो जाय, वही सच्चा सत्संग है। इस समय संसार से ईश्वर तत्त्व प्रायः पूर्ण रूप से लोप हो गया है।

इस समय उस तत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति मात्र कल्पना का विषय रह गया है। उस परमतत्त्व के लोप होने के सम्बन्ध में समर्थ गुरु स्वामी रामदास जी महाराज कहते हैं:-

''तिन्ही लोक जेथून
निर्माण जाले।
तया देवरायासि कोणी न बोले।
जगी थोरलादेव तो चोरलासें
गुरुवीण तो सर्वथाही न दीप्ते।।''

''तीनों लोक-भूलोक, द्युलोक, पाताल लोक जहाँ से उत्पन्न हुए उस सर्वश्रेष्ठ परब्रह्म देवाधिदेव श्रीराम को कोई नहीं कहता। जग में, सर्वोत्तम देव चुराया गया है। उसके चोरी हो जाने के बाद, वह दिखाई नहीं दे रहा है। उस सर्व देवाधिदेव की चोरी की तो गई है किन्तु **सदगुरुरूपी गुप्तचर** की सहायता के बिना वह नहीं दिख सकेगा।''परन्तु इस युग में संत सद्गुरु मिलना बहुत ही कठिन है। इस सम्बन्ध में समर्थ गुरुदेव कहते हैं :-

गुरु पाहतां पाहतां लक्ष कोटी।
बहुसाल मंत्रावली शक्ति मोठी।
मनी कामना चेटके धातमाता।
जनीव्यर्थ रे तो नव्हे मुक्तिदाता।।

''गुरुओं को देखते-देखते तो लाखों-करोड़ो गुरु मिलेंगे। वे बहुत वर्षों तक मंत्र द्वारा चतुराई से अपने भीतर जादूगरी की बड़ी शक्ति द्वारा कामना-पूर्ति कर लोगों को अपने चंगुल में चिन्तामणि सदृश अपनी मन्त्र शक्ति के प्रभाव से ही फँसाते फिरते हैं।

ऐसे लोग व्यर्थ होते हैं। वे मोक्षदाता-सद्गुरु पद पाने के अधिकारी नहीं होते''। आगे ऐसे गुरुओं के लिए समर्थ गुरु कहते हैं। :-

''नव्हे चेटकी चालकू द्रव्यभोंदू।
नव्हे निंदकू मत्सरू भक्ति मंदु।
नव्हे उन्मतू वेसनी संगबाधू।
जगी ज्ञानियो तोचि साधु
अगाधू।।

जो जादू करने वाला होता है, लोगों के सम्मुख दीनता दिखाकर आह्लाद उत्पन्न करनेवाला या मिथ्या प्रशंसा करनेवाला होता है। तथा अपने साधुत्व का प्रदर्शन कर लोगों से पैसा लूटनेवाला द्रव्यलोभी होता है, वह सद्गुरु पद का अधिकारी नहीं होता।''

''वह किसी की निन्दा नहीं करता किसी से मत्सर्य नहीं रखता, उन्मत्त नहीं होता, व्यसनी नहीं होता तथा बुरी संगति में नहीं रहता जो बुरी संगतियों में बाधा डालनेवाला ज्ञान सम्पन्न होता है, वही अगाधज्ञानी व्यक्ति साधु है। ऐसा जानना चाहिए।

नव्हे वाडगी चाहुटी काम पोटी।
क्रियेवीण वाचालत तेचि मोटी।।
मुखो बोलिल्यासारिखें चालताहे।
मना सद्गुरु तोचि शोधूनि पाहे।।

वह व्यक्ति चुगलखोर नहीं होता। उसके अन्तरंग में काम भावना नहीं होती। वह मुख से बोले गये शब्दों का वैसा ही आचरण करने में सभ्य होता है। हे मन इन लक्षणों से युक्त व्यक्ति को ही सद्गुरु समझना चाहिए।

जनीं भक्त ज्ञानी विवेकी विरागी।
कृपालू मनस्वी क्षमावंत योगी।
प्रभूदक्ष व्युत्पन्न चातुर्य जाणे।
त्याचेनि योगे समाधान बाणे।।

वह सद्गुरु पद का अधिकारी भक्त होता है और विवेक वैराग्य सम्पन्न, कृपालु मनस्वी क्षमाशील, योगी, समर्थ, अत्यन्त सावधान, व्युत्पन्न (प्रत्युत्पन्नमतिवाला) चातुर्यसम्पन्न तथा संगति करने पर समाधान की प्राप्ति कराकर समाधानी बनाने वाला होता है।

नव्हें तेंचि जाले नसे तेंचि आल।
कलों लागले सज्जनाचेनि बोल।।
अनिर्वाच्य ते वाच्य वाचे वदावें।
मना संत आनंत शोधीत जावें।

जो पहले नहीं था, वह हो गया - स्वरूप का बोध पहले नहीं था, वह हो गया। जो नहीं आता था, वह समाधान आ गया। ब्रह्मज्ञान से पूर्ण स्वरूपानन्द का भोग करने से समाधान चित्त में वास करने लगता है। गहन वेदान्त वाक्यों का बोध जो स्वरूप का संकेत दिया करता था, वह पहले नहीं समझता था। वह बोध महावाक्य (**तत्त्वमसि**) आदि का अर्थ सद्गुरुदेव के कृपा वचनों से सहज ही आत्मसात् हो जाने से समझ में आने लगा।

जो ब्रह्म निर्गुण निराकार और वाणी से परे अनिर्वचनीय था, वही वाणी से कहने योग्य और वाच्य हो गया। यह सद्गुरुदेव की कृपा है कि वही ब्रह्म अब मेरे कथन का विषय हो गया है। हे मन ! नित्य अनन्त ब्रह्म को सत्संगति में रहकर खोजते रहो।''

उपर्युक्त से स्पष्ट होता है कि ऐसे संत सद्गुरु की सत्संग को ही सच्चे अर्थों में आध्यात्मिक सत्संग कहा जा सकता है।

अगर आध्यात्मिक सत्संग प्रत्यक्ष परिणाम न दे तो उसे सत्संग नहीं कहा

जा सकता। केवल विश्वास से काम नहीं चल सकता। जिस प्रकार गुड़ खाते ही मुँह में मिठास पैदा हो जाता है, ठीक वैसा ही परिणाम सत्संग का होना चाहिए। इसके विपरीत सभी कर्मकाण्ड और प्रदर्शन हैं। समर्थ गुरु स्वामी रामदास जी महाराज ने जो संत सद्गुरुदेव की पहचान बताई है, वैसा ही गुरु, **'सत्संग'** के योग्य होता है।

संसार के प्रायः सभी धर्म संसार के सर्वभूतों (**जड़ और चेतन**) की उत्पत्ति शब्द से मानते हैं। सभी धर्म कहते हैं कि वह शब्द **'प्रकाशप्रद'** हैं। सर्व प्रथम शब्द और प्रकाश से ज्ञान की उत्पत्ति होती है, फिर संपूर्ण ब्रह्माण्ड और त्रिगुणमयी माया की उत्पत्ति होती है। फिर त्रिगुणमयी माया अपने जनक **'शब्द'** और प्रकाश (प्रकाशप्रदशब्द) की प्रेरणा से संसार के सर्वभूतों की रचना करती है। संसार का यह सारा प्रपंच उसी प्रकाशप्रद शब्द की देन है। दूसरे शब्दों में **यह सारा संसार एक ही परमसत्ता का विस्तार मात्र है।** संत सद्गुरुदेव निराकार ब्रह्म का सगुण साकार स्वरूप ही होता है।

अतः संत सद्गुरुदेव द्वारा प्राप्त प्रकाशप्रद शब्द की धार के सहारे उस दिव्य प्रकाश के आनन्द और रोशनी में उस पथ पर चलना सम्भव है, जहाँ से आदि में वह प्रकाशप्रद शब्द प्रकट होता है। उसी को **अलख लोक** के ऊपर वाला, अगम लोक संतों ने बारम्बार कह कर वर्णन किया है। उस लोक में जाते ही जीवात्मा अपने जनक परमात्मा में पूर्ण रूप से लीन हो जाता है। इसी का नाम **'मोक्ष'** है। प्रकाशप्रदशब्द के दिव्य प्रकाश से मनुष्य को अपने अन्दर उस दिव्य आनन्द की प्रत्यक्षानुभूति होने लगती है। बिना उस आनन्द की प्राप्ति के मनुष्य को मोक्ष का अर्थ ही समझ में नहीं आ सकता।

जब तक संत सद्गुरुदेव की कृपा से उस दिव्य आन्तरिक आनन्द का स्वाद मनुष्य चख नहीं लेता, उसे माया के प्रभाव से बाहरी भौतिक सुख ही प्रभावित करते रहते हैं। वह बारम्बार यही कहता है कि क्या जरूरत है मोक्ष की? संसार के इस आनन्द को छोड़ कर मोक्ष का प्रयास मूर्खता है। क्योंकि उसने उस दिव्य आन्तरिक आनन्द का स्वाद चखा ही नहीं है। इस लिए वह सांसारिक सुखों में और दिव्य आन्तरिक आनन्द में भेद समझ ही नहीं सकता है। यह सारा प्रपंच केवल उपदेश, प्रदर्शन शब्दजाल और दर्शन शास्त्र के ग्रन्थों आदि से समझ में नहीं आ सकता।

ये सब मनुष्य को बुद्धि की कसरत मात्र करवा कर ज्ञानी बनने का भ्रम ही पैदा कर सकते हैं। इस समय संसार में यही भ्रम खुला बिक रहा है। अध्यात्म ज्ञान के नाम से यह संसार में सर्वत्र उपलब्ध है। क्योंकि यह ज्ञान कोई प्रत्यक्ष परिणाम नहीं देता है, इसलिए संसार के युवा वर्ग का विश्वास इससे खत्म हो चुका है। मृत्यु के करीब पहुँचे हुए शक्ति हीन स्त्री-पुरुष ही जीवन में किये हुए काम को याद करके अपनी ही तस्वीर से भयभीत होकर इसे पाने का प्रयास कर रहे हैं। क्योंकि भय के कारण बुद्धि कुण्ठित हो जाती है, अतः वे असन्तुलित प्राणी कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकते।

अध्यात्म का पतन उस समय प्रारम्भ हुआ, जब धर्म गुरुओं ने इसका सम्बन्ध पेट से जोड़ लिया। आज सभी धर्मों के धर्मगुरुओं को जीवित रहने के लिए हठ धर्मिता से अध्यात्म पर चलना पड़ रहा है। ऐसा करना उनकी मजबूरी है। इस हठधर्मी प्रवृत्ति ने संसार के लोगों को विद्रोही बना दिया। इस प्रकार अध्यात्म एक तमाशा बन चुका है। सर्व भूतों के जनक आदि कारण के प्रति ऐसा भाव परिवर्तन विशेष का द्योतक है। यह वैज्ञानिक सच्चाई है कि जब किसी बात की अति हो जाती है तो उसका अन्त हो जाता है। ऐसा होना अनिवार्य भी है। क्योंकि अनादि काल से उत्थान और पतन का यह क्रम चला आ रहा है।

संसार का अन्धकार उस दिव्य ज्ञान ज्योति के उदय हुए बिना हटना असम्भव है। **पहला दीपक जलना ही कठिन होता है, उसके बाद तो दीपक से दीपक जलने की प्रक्रिया के अनुसार पूरे विश्व में प्रकाश फैलने में देर नहीं लगेगी।** जब यह मधुर स्वर लहरी संसार के वायु मण्डल में तरंगित होने लगेगी तो आम प्राणी इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। इस प्रकार यह दिव्य प्रकाश, प्रकाश की गति से भी तेज, पूरे संसार में फैल जावेगा। प्रतिरोधक शक्तियाँ संभल भी नहीं पाएंगी। परन्तु इसका यह मतलब नहीं कि वे बिना विरोध के शान्त हो जाएंगी।

उस परमसत्ता को संसार से उनका सफाया करना है। अतः उस विकृति के सफाये के लिए अन्धेरे और उजाले का संघर्ष अनिवार्य है। इसके बिना पूर्ण शान्ति असम्भव है। यह क्रम अनादिकाल से चला आ रहा है। पाप का अन्त कुरुक्षेत्र में ही होता है। महर्षि श्री अरविन्द की यह घोषणा कि वह परमसत्ता भारत की भूमि पर 24 नवम्बर 1926 को अवतरित हो चुकी है, गलत नहीं है। उसके अवतरित होने का स्पष्ट अर्थ है, अन्धकार का सफाया। ऐसा अनादि काल से होता आया है। हमें इतिहास को ध्यान में रखते हुए ऐसे संघर्षों से घबराना नहीं चाहिए। क्योंकि ऐसा होना अनिवार्य है। ऐसा अनादि काल से होता आया है।

संसार में अन्धकार से जो संहार और हा-हा कार मचा हुआ है। वह पूर्ण शान्ति का उषाकाल है। दीपक जब बुझते समय तेज प्रकाश फैलाता है, वैसे ही अन्धकार मिटने से पहिले भयंकर तबाही मचाता है। यह प्रकृति का अटल नियम है। 11.12.1988

गतांक से आगे...

सद्गुरुदेव का प्रवचन

कुण्डलिनी जनित ध्यान कैसे करें ?

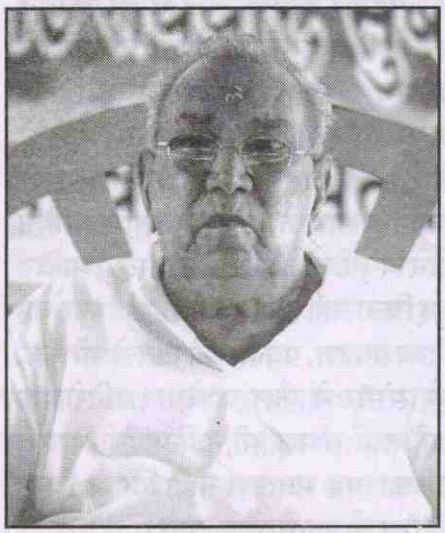

अब ध्यान जो है उसके लिए एक ही शर्त है कि सुबह नहा धोकर, खाली पेट, सूर्योदय से पहले-पहले हो तो बहुत अच्छा, नहाने की सुविधा नहीं है तो बिना नहाए भी कर सकते हो। किसी पर बैठ जाइए, जमीन पर बैठ जाइए, आसन बिछा लीजिए, किधर ही मुँह कर लीजिए, कोई फर्क नहीं पड़ता।

भगवान् कोई एक ही दिशा में नहीं बैठा है वो तो सर्वत्र है, सर्वज्ञ है और शेर की खाल बिछाओ कि कुशासन बिछाओ कि मृग की खाल बिछाओ ! उसमें बैठा है भगवान् घुसा हुआ जो आपको ऊपर बैठते ही मिल जाएगा। ये तो सब कर्म काण्डियों के टोटके हैं; मेरे को इसमें कोई सच्चाई नजर नहीं आती। कहीं बैठ जाइए और नाम जप चालू है, आँख बंद कर लो और गुरु को यहाँ (आज्ञाचक्र) पर देखो। अब क्या होगा, उससे ? जो मैं आपको नाम बताऊँगा, वो चेतन मंत्र है, एनलाईटेंड है, उसमें प्राण-प्रतिष्ठा की हुई है। उसमें असंख्य गुरुओं की कमाई है। मैं तो लुटाने निकला हूँ, दोनो हाथों से !

उस नाम जप से आपकी कुण्डलिनी जाग्रत हो जाएगी। अब कुण्डलिनी शक्ति रीढ़ की हड्डी के आखिरी-आखिरी हिस्से में, साढे तीन आंटे (फेरे) लगाकर, सुषुप्ति में रहती है, अचेतन है। जब वो जाग्रत हो जायेगी, चेतन हो जायेगी तो सीधी ऊपर उठकर सुषुम्ना में खड़ी हो जायेगी। अब वो यहाँ पहुँचना चाहेगी, सहस्रार में। क्योंकि शिव और शक्ति का मिलन ही तो मोक्ष है, पृथ्वी तत्त्व का आकाश तत्त्व में लय होना ही मोक्ष है। अब वो ऊपर कैसे बढें ? मैंने आपको पहले बताया कि ये भौतिक सांइस से भी करेक्ट (सही) सांइस है, भौतिक सांइस तो अभी तक अधूरी है, ये पूर्ण सांइस है। अब जिस तरह से आप रॉकेट देखते हो-ऊपर जाता है तो नीचे स्पार्क होता है, झटका लगता है तो ऊपर खिसकता है, उसी प्रकार कुण्डलिनी को भी खिसकाया जाये तो योग में पाँच प्रकार के वायु कहे हैं मौटे तौर से-प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान। हरेक वायु का शरीर में, अलग-अलग हिस्सों में काम होता है। अपान वायु जो है नाभी के नीचे के डिचार्ज को शरीर से बाहर फेंकता है। जब तक अपान वायु ऊपर नहीं उठेगा, कुण्डलिनी ऊपर नहीं उठेगी। क्योंकि कुण्डलिनी रीढ़ की हड्डी के आखिरी हिस्से में है तो योग में तीन प्रकार के बन्ध लगते हैं।

जिस योग की बात मैं कर रहा हूँ, उसने सांइस वालों के लिए बड़ी समस्या खड़ी कर दी, उसका संचालन कुण्डलिनी स्वयं करती है। वह चेतन सत्ता मनुष्य का शरीर, मन, प्राण, बुद्धि आदि अपने वश में कर लेती है, और सारी यौगिक क्रियाएँ स्वयं करवाती हैं। साधक उसको रोक नहीं सकता, न कर सकता है।

वो तो आँख बन्द किए यहाँ (आज्ञाचक्र) पर 'गुरु' को देख रहा है, दृष्टा भाव से देख रहा है कि क्या हो रहा है ? जो मूवमेन्ट हो रहा, उसको रोक नहीं पाता। मैंने हजारों इंजीनियर्स, डॉक्टर्स को, विज्ञान के लोगों को कहा, अगर आप सच्चाई जानना चाहते हो तो आओ, और सबको 'योग' हो गया। लाखों को हो रहा है तो ये योग पातंजलि योग में वर्णित योग है।

क्रमशः अगले अंक में...

Religious Revolution in the World

Also, the piercing of different consciousness centers equips the practitioner with Siddhis (powers) such as increased intuition, the ability to see unlimited past and future and perceive the existence of worlds beyond the physical one that we live in. When the 'Kundalini' reaches 'Sahasrahara', the practitioner's spiritual journey is complete as it is here that he realizes his true self. This realization releases him from the bondage of Karmas, which is the root cause of all human miseries. It is also here that the seeker realizes that he is himself the Brahman, the eternal Supramental Consciousness, the state which also known as Moksha.

What are Gunas and their effects?

The Vedic scriptures acknowledge the interplay of Brahman, the formless, limitless, eternal and never-changing Supramental Consciousness on one hand and its manifestation as the consciousness in the ever-changing material world. The consciousness in the material world, which impacts all animate and inanimate objects, is made up of a combination of three Gunas (qualities) — Sattva (lighted, pure, intelligent and positive), Rajas (passionate and energetic) and Tamas (negative, dark, dull and inert).

Sattva is the force of equilibrium. Sattva translates in quality as goodnes and harmony, and happiness and light. Rajas is the force of kinesis. Rajas translates in quality as struggle and effort, passion and action. Tamas is the force of unconsciousness and inertia. Tamas translates in quality as obscurity, incapacity and inaction.

All humans possess these Gunas. However, no existence is cast in the single mould of any of these three modes of the cosmic force. All the three qualities are present in everyone and everywhere. There is a constant combining and separating of the shifting relations of these qualities. They constantly struggle to influence or dominate each other. This is the reason why no person is consistently good or bad; intelligent or dull; active or lethargic.

When Sattvic quality is dominant in a person, it propels him toward seeking greater consciousness so that he could free himself from Karmic bondage and return to the Supramental Consciousness to which he originally belongs. Domination by either Rajasic or Tamasic quality leads the person onto an unending cycle of pleasure and pain and life and death. The practice of Siddha Yoga leads to the ascent of Sattvic qualities and eventual progress to Moksha, the final spiritual liberation.

Count. to Next Edition...

www.the-comforter.org

अवतार

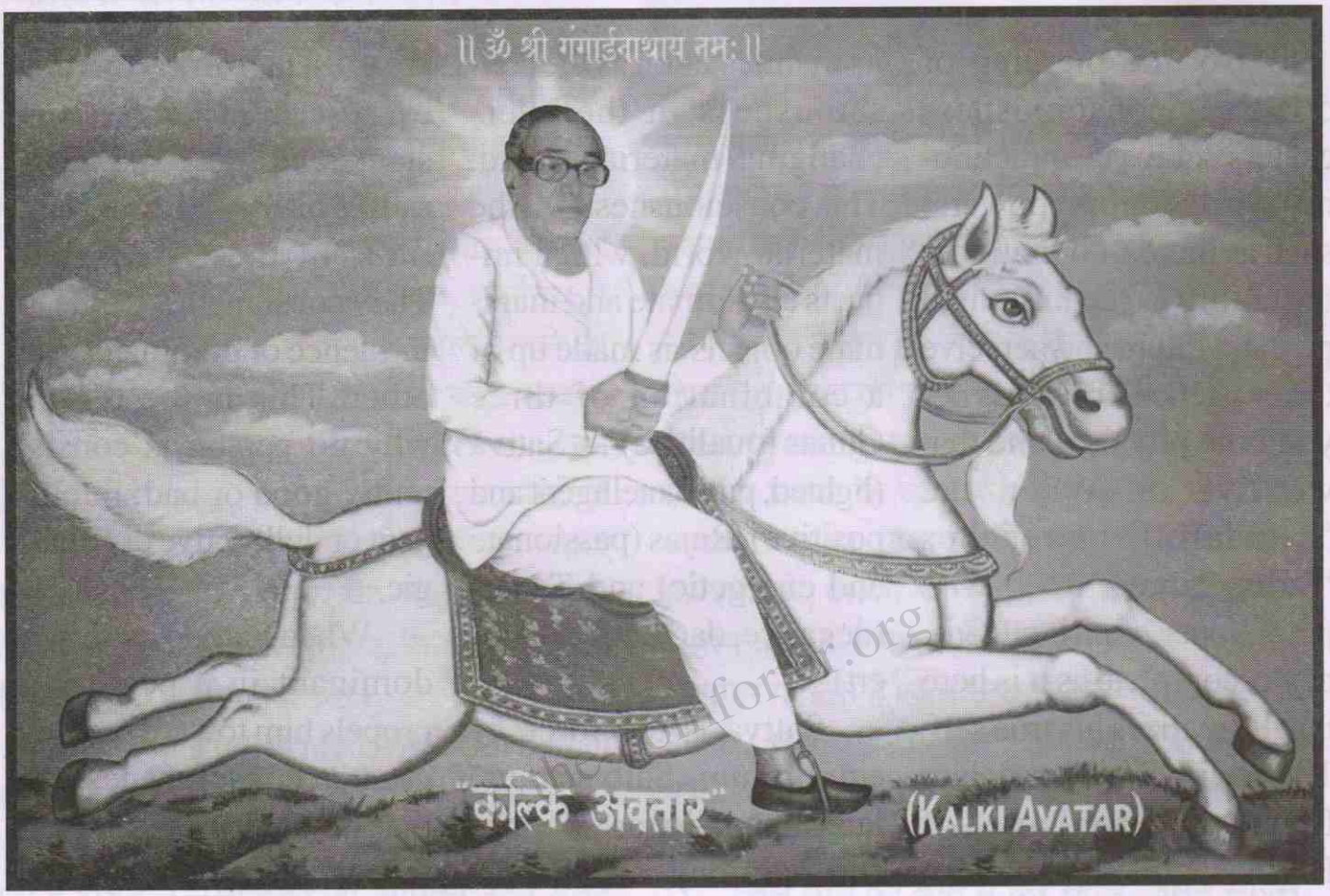

व्यक्ति विशेष ईश्वर की भी आवश्यकता है; और हम जानते हैं कि किसी व्यक्ति विशेष ईश्वर की वृथा कल्पना से बढ़कर जीवित ईश्वर इस लोक में समय समय पर उत्पन्न होकर हम लोगों के साथ रहते भी हैं, जब कि काल्पनिक व्यक्ति विशेष ईश्वर तो सौ में निन्यानवे प्रतिशत उपासना के अयोग्य ही होते हैं। किसी प्रकार के काल्पनिक ईश्वर की अपेक्षा, अपनी काल्पनिक रचना की अपेक्षा, अर्थात् ईश्वर सम्बन्धी जो भी धारणा हम बना सकते हैं, उसकी अपेक्षा वे पूजा के अधिक योग्य हैं।

ईश्वर के सम्बन्ध में हम लोग जो भी धारणा रख सकते हैं, उसकी अपेक्षा श्रीकृष्ण बहुत बड़े हैं। हम अपने मन में जितने उच्च आदर्श का विचार कर सकते हैं, उसकी अपेक्षा बुद्धदेव अधिक उच्च आदर्श हैं, जीवित आदर्श हैं। इसीलिए सब प्रकार के काल्पनिक देवताओं को पदच्युत करके वे चिर काल से मनुष्यों द्वारा पूजे जा रहे हैं। हमारे ऋषि यह जानते थे, इसीलिए उन्होंने समस्त भारतवासियों के लिए इन महापुरुषों की, इन अवतारों की, पूजा करने का मार्ग खोला है। (५/१४६)

–स्वामी विवेकानन्द

गतांक से आगे...

हृदय मंथन

(१३) गुरु कृपा से जो शक्ति साधक में अन्तर्मुखी जाग्रत होती है, उसको सामान्य नहीं समझना चाहिए। ऐसी जाग्रति जीवन की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटना है जो आप के सामने दिव्य अनुभवों, अध्यात्म की वास्तविकताओं तथा आत्म-लाभ का मार्ग खोल देती है, किन्तु जागृति के पश्चात् ऐसे निश्चिन्त भी नहीं हो जाना कि अब हमें कुछ करने की आवश्यकता ही नहीं। साधक की वास्तविक परीक्षा जागृति के पश्चात् ही आरम्भ होती है। यह मत समझ बैठना कि अब साधन निर्विघ्न चलता रहेगा। जहाँ एक ओर आप की सफलता का मार्ग खुल जाता है, वहीं आप के सामने विघ्नों, कठिनाइयों तथा समस्याओं का पहाड़ भी खड़ा हो जाता है ।

(१४) गुरु तत्त्व के दो स्वरूप हैं-बहिर्गुरु तथा अन्तर्गुरु। अन्तर्गुरु ही बाह्य प्रत्यक्ष गुरु में भी कार्यशील होता है तथा शिष्य के अन्तर में भी, विभिन्न अनुभवों के माध्यम से उन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है। भाव यह है। कि वास्तव में आन्तर्गुरु अर्थात् ईश्वरीय जाग्रत शक्ति ही गुरु है, जो गुरु तथा शिष्य दोनों के शरीरों के माध्यम से कार्यशील तथा प्रकट होती है ।साधक को गुरु-शरीर के अन्दर के गुरुतत्त्व को पहचान कर, उससे संबंधित होना होता है, किन्तु उसके लिए पहले वह अपने अन्तर में गुरु-तत्त्व का साक्षात्कार करता है।तभी गुरु शरीर में गुरु तत्त्व को पहचान पाता है। गुरु शिष्य का मिलन, दोनों शरीरों में विद्यमान गुरु तत्त्व का मिलन है । तब गुरु-शिष्य संबंध विलीन हो जाता है।

(१५) गुरु तत्त्व एक सर्वव्यापक सत्ता है। उस सत्ता का कल्याणकारी स्वरूप ही गुरु कहलाता है। जीव के कल्याण के लिए ही वह सत्ता, कई बार जीव को दण्डित भी करती है। गुरु शरीर के माध्यम से, कृपा की वर्षा कर, उसे ज्ञान प्रदान करती है। वही सत्ता जीव में वैराग्य की स्थापना करने के लिए उसे अपमानित, लज्जित, भयभीत कर, भाँति भाँति के दुःखों की व्यवस्था करती है ताकि उसके समक्ष जगत् का वास्तविक स्वरूप प्रकट हो जाय।

(१६) साधन एक नित्य सतत्, तेल-धारावत् प्रवाहित होने वाला क्रम है, जिसमें क्षण-मात्र का भी खण्ड नहीं होता।यदि व्यवधान आ जाय तो साधन क्रम रुक जाता है तथा फिर वह साधन नहीं रहता।साधन तथा साधनेतर समय का वर्गीकरण केवल विषय को समझने के लिए है अन्यथा सभी समय साधन का ही होता है। साधनेतर समय में व्यवहार का भी समावेश होता है, किन्तु साधक व्यवहार को भी साधन बना लेता है।

(१७) मन की गाँठ कहो या भ्रान्ति, यही माया है। जड़ तथा चेतन में ग्रन्थि पड़ जाने की भ्रान्ति हो जाती है, जो न होते हुए भी, हुई सी दिखाई देती है। इसी भ्रान्ति से ग्रसित होकर जीव अभिमान करता, संस्कार संचय करता तथा सुखी-दुःखी होते हुए, युग युगान्तर से जन्म पर जन्म ग्रहण करता चला आ रहा है।इसी भ्रान्ति के आधार पर जगत् टिका है ।भ्रान्ति न रहने पर जगत् का अस्तित्त्व भी समाप्त हो जाता है ।

(१८) मनः स्थिति के अनुरूप ही जीव जगत् को देखता है इसीलिए एक ही जगत् प्रत्येक जीव को अलग-अलग रूप में दिखाई देता है। पापी-मन को जगत् पाप से भरा दिखाई देता है, भक्त को जगत् में सर्वत्र भगवान् दिखाई देते हैं। अन्तर का भाव, वासना, वृत्ति, गुण, दृष्टिकोण, संस्कार यह सब मिलकर मनः स्थिति का निर्धारण करते हैं। यदि जीव इस भाव संस्कारादि से दूर हो जाए तो जगत् का नाटक ही समाप्त हो जाता है।

(१९) भगवान् की कृपा हो जाय तो बात दूसरी है, अन्यथा साधन, दीर्घकाल तक चलने वाला एक लम्बा क्रम है जिसमें पग-पग पर साधक की परीक्षा होती रहती है, अतः साधक को सावधानीपूर्वक, धैर्यपूर्वक साधन की निरन्तरता बनाए रखना होती है। उसके अन्तर के विकार बार-बार उसे उकसाते हैं, मन को विक्षिप्त तथा उद्वेलित करते रहते हैं।साधक को एक ओर अन्तर के विकारों से युद्ध करना होता है तथा दूसरी ओर अध्यात्म लाभ के लिए प्रयत्नशील रहना होता है।यह अन्तर्द्वन्द्व कोई साधक ही समझ सकता है। जगत् के लोग, नासमझी में उसकी हँसी उड़ाते हैं ।साधक को उसे भी सहन करना पड़ता है।

संदर्भ-स्वामी शिवोमतीर्थ महाराज
'हृदय मंथन' पुस्तक से

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

योग के बारे में

जीवन या प्राण का हर रूप मन को संगठित नहीं करता, यद्यपि प्राण के हर रूप में मन होता है और आग्रह के साथ निस्तार और आत्माभिव्यक्ति के लिये खोज करता है। हर मानसिक प्राणी आदर्श **सत्य** के जीवन को संगठित करने के योग्य नहीं होता हालांकि, हर मानसिक प्राणी में, मनुष्य में ही नहीं कुत्ते, वानर और कीट तक में सत्य और ज्ञान की **बंदी** बनी हुई आत्मा अपने छुटकारे और अपनी अभिव्यक्ति की खोज करती है।

अपनी रचना के हर उपलब्ध स्तर पर प्रकृति पहले तो उस स्तर पर अपने प्राणियों के स्वाभाविक **अस्तित्व** को बनाये रखने के बारे में निश्चित हो जाना चाहती है। इस पहले उद्देश्य के चरितार्थ हो जाने के बाद, उसमें सबसे अधिक **उपयुक्त** के द्वारा वह अपने कामों से बच निकलती, जो कुछ स्वयं उसने बनाया है। उसे ढोकर परे की किसी चीज में पहुँचने की कोशिश करती है।

जब वह मनुष्य तक पहुँच जाती है तो वह सत्ता के एक ऐसे प्रकार तक जा पहुँचती है जिसमें हर व्यक्ति तत्वतः प्राकृतिक ही नहीं बल्कि अपने अंदर के **अति प्राकृतिक** को भी चरितार्थ कर सकता है। कुछ हेर-फेर के साथ गुणों के बारे में भी यही बात है लेकिन इस बारे में किसी और प्रसंग में ज्यादा विस्तार के साथ बोलना अच्छा रहेगा।

फिर भी, यह सच्ची बात है कि **''ऊर्ध्वमुखी''** गति ही प्रकृति की सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण गति है। रुकी हुई स्थिति एक निम्नतर परिपूर्ति है। अगर वह पूर्ण है तो वह क्षणिक पूर्णता है। यह संघर्ष के क्षेत्रों में और गुजरते हुए रूपों की शैली में पूर्णता है, अशनाया मृत्यु के राज्य में पूर्णता है, ऐसी क्षुधा के जो मृत्यु है, ऐसी क्षुधा के राज्य में जो सृजन् करती और अपनी ही सृष्टि पर पुष्ट होती है। **ऊर्ध्वमुखी गति वह है जो मृत्यु से होकर अमरता की ओर ले जाती है** और शरीर की इस धरती पर स्वर्ग के आनन्दमय और ज्योतिर्मय राज्य को चरितार्थ करती है। नीचे की ओर पतन, विनाश है, नरक है -- महती विनाशः। गीता में इन तीन गतियों की ओर संकेत किया हैं। मानवता को उत्तम, मध्यम और अधम तीन गतियों में से चुनाव करना होता है। इसमें से हर व्यक्ति को चुनाव करना होता है क्योंकि हम जैसा चुनाव करेंगे उसी के अनुसार भगवान् अपने-आपको हमारे अंदर चरितार्थ करेंगे-क्षणिक मानव तुष्टि, भागवत पूर्णता या हमारी मानवता का प्रकृति के सफल कूड़े करकट में विघटन।

प्रत्येक प्रकृति किसी अति-प्रकृति की ओर, किसी ऐसी चीज की ओर एक कदम है जो अपने लिये तो स्वाभाविक और प्राकृत है, पर अपने से नीचे के लिये **अति-प्राकृत** है। प्राण भौतिक के लिये अति-प्राकृत है, मन प्राण के लिये अति-प्राकृत है, आदर्श सत्ता मन के लिये अति-प्राकृत है, अनन्त आत्मा आदर्श सत्ता के लिये अति-प्राकृत है। अतः हमें अति-प्राकृत को अपना लक्ष्य स्वीकार कर लेना चाहिये क्योंकि अपने से ठीक ऊपर के अति-प्राकृत की ओर हमारी प्रकृति का रुझान, विश्व शक्ति की आज्ञा है जिसका पालन होना चाहिये, उसके विरुद्ध विद्रोह या उस पर अविश्वास नहीं किया जा सकता। यही श्रद्धा का महत्त्व है और यदि धर्म भ्रष्ट न हुआ हो तो उसकी गणनातीत उपयोगिता है। हमारा प्राकृत मन अपनी प्रकृति में ही रहना चाहता है और अतिप्राकृतिक बारे में अविश्वासी रहता है। श्रद्धा ओर धर्म सर्व-प्रज्ञ शक्ति की प्राकृत और कोरे मानसिक मनुष्य को अपनी आदर्श अन्तरात्मा की प्रेरणाओं के लिये अभ्यस्त बनाने की व्यवस्थाएँ हैं जो अब भी धुंधलके में से प्रकाश में, अंधेरे में टटोलने से सच्चाई में, इन्द्रिय संवेदनों और तर्कणा से अन्तर्दर्शन और प्रत्यक्ष अनुभूति में बच निकलना चाहता है।

ऊर्ध्वमुखी वृत्ति हमारे ऊपर आरोपित की गयी है और हम स्थायी रूप से उसका प्रतिरोध नहीं कर सकते। किसी न किसी समय भगवान् हमें अपने हाथ में लेंगे और जबर्दस्ती उस खड़ी चढ़ाई पर उठा देंगे जो हमारी अपुनरुज्जीवित चाल के लिये बहुत कठिन है। जिस तरह निश्चित रूप से पशु मानवता की ओर विकसित होता है और अपने सबसे अधिक लचीले प्रकारों में एक प्रकार की मानवता प्राप्त कर लेता है, जिस तरह निश्चित रूप से एक बार चींटी और वानर के प्रकट होने पर मनुष्य का आना अवश्यंभावी था उसी तरह निश्चित रूप से मनुष्य, देवत्व की ओर विकसित होता है और अपने अधिक योग्य प्रकारों में देवत्व के अधिक निकट पहुँच जाता है और एक प्रकार का देवत्व प्राप्त कर लेता है। ❖❖❖

संदर्भ-श्री अरविन्द, 'मानव से अतिमानव की ओर' पुस्तक से...

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे...

योग के आधार

श्री अरविन्द

श्रद्धा, अभीप्सा और आत्मसमर्पण

यह अग्नि अभीप्सा और आंतर तपस्या की दिव्य अग्नि है। जब यह अग्नि मानवी अज्ञान के अंधकार में अपनी क्रमवर्द्धमान शक्ति और **विपुलता** के साथ बार-बार अवतरण करती है तब आरंभ में ऐसा प्रतीत होता है मानो यह अंधकार इसे निगलता जाता है और अपने अंदर विलीन करता जाता है; परंतु जब यह **अवतरण** अधिकाधिक होता रहता है, तब यह अंधकार को ज्योति में, मानव-मन के अज्ञान और अचेतनता को **आध्यात्मिक चेतना** में परिणत कर देता है।

योग-साधना करने का अर्थ ही यह है कि मनुष्य सब प्रकार की आसक्तियों पर विजय पाता तथा एकमात्र भगवान् के अभिमुख होने का संकल्प रखता है।

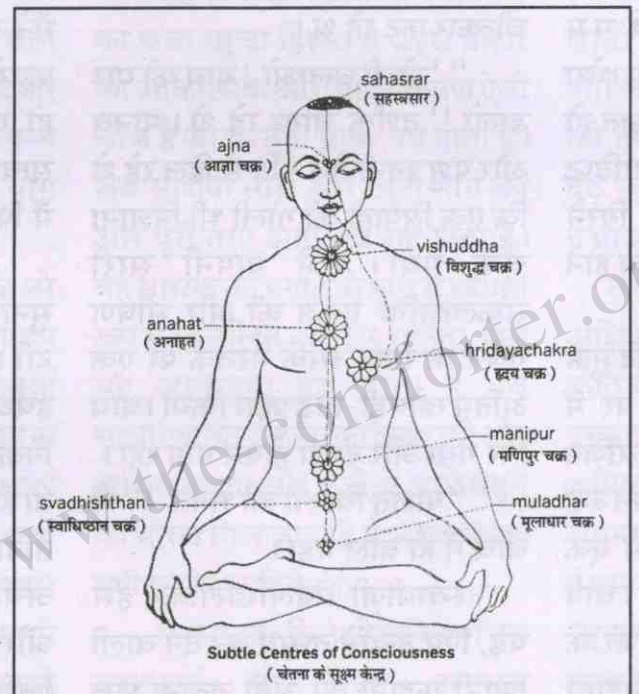

Subtle Centres of Consciousness
(चेतना के सूक्ष्म केन्द्र)

योग में सबसे प्रधान बात यही है कि प्रत्येक पग पर भागवत कृपा पर विश्वास रखते हुए, अपने विचारों को निरंतर भगवान् की ओर परिचालित करते हुए, तब तक अपने-आपको समर्पित किया जाये जब तक कि हमारी सत्ता का उद्घाटन न हो जाये और हम यह न अनुभव करने लगें कि हमारे आधार में सद्गुरु की शक्ति कार्य कर रही है।

''इस योग का सारा सिद्धांत ही है भागवत प्रभाव की ओर अपने-आपको उद्घाटित करना।'' यह प्रभाव तुम्हारे सिर के ऊपर ही वर्तमान है; यदि तुम एक बार इसके विषय में सचेतन हो सको तो फिर तुम्हें इसका आह्वान कर अपने अंदर इसे उतारना होगा। यह मन के अंदर तथा शरीर के अंदर अवतरित होता है शांति के रूप में, ज्योति के रूप में, कार्य करने वाली एक शक्ति के रूप में, भगवान् की साकार या निराकार उपस्थिति के रूप में, आनंद के रूप में। जब तक यह चेतना नहीं प्राप्त होती, तब तक साधक को **श्रद्धा-विश्वास** बनाये रखना होगा और आत्मोद्घाटन के लिये **अभीप्सा** करनी होगी। अभीप्सा, आह्वान ओर प्रार्थना एक ही चीज के भिन्न-भिन्न रूप हैं ओर ये सभी फलोत्पदाक हैं; इनमें से जो भी रूप तुम्हारे पास आये और तुम्हारे लिये सबसे अधिक आसान हो, उसी को तुम अपना सकते हो। दूसरा मार्ग है-**'एकाग्रता'** का; तुम अपनी चेतना को हृदय में एकाग्र करो (कोई-कोई सिर में या सिर के ऊपर करते हैं) और हृदय में श्रीमां का ध्यान करो और वहाँ उनका आह्वान करो। इनमें से किसी एक मार्ग का अथवा भिन्न-भिन्न समयों पर दोनों मार्गों का अनुसरण किया जा सकता है-जिस समय जो मार्ग स्वभावतः तुम्हारे सामने आ जाये अथवा जिसकी ओर तुम्हारी प्रवृत्ति हो जाये। पर, विशेषकर आरंभ में सबसे अधिक आवश्यक बात यह है कि अपने मन को अचंचल बनाया जाये, ध्यान के समय उन सभी विचारों और वृत्तियों का त्याग किया जाये जो साधना के लिये विजातीय हों। अचंचल मन में ही अनुभूति के आने के लिये क्रमशः तैयारी होती जायेगी। परंतु सब कुछ यदि एक साथ ही हो तो तुम्हें अधीर नहीं होना चाहिये; मन के अंदर पूर्ण अचंचलता स्थापित करने में समय लगता है; जब तक चेतना तैयार न हो जाये, तब तक तुम्हें अपने प्रयास में लगे रहना चाहिये।

''समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग आज्ञाचक्र (भृकूटी) पर ध्यान करवाते हैं। पूरी एकाग्रता जब सद्गुरुदेव पर होती है तो साधक का सर्वांगीण विकास होता है। ❖❖❖

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे...

योगियों की आत्मकथा

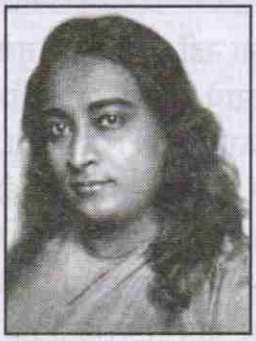

''पलक झपकते ही मैं उसके पिंजरे में घुस गया; परन्तु जैसे ही मैंने दरवाजा बन्द किया, राजाबेगम उछलकर सीधा मेरे ऊपर आ गया। मेरा दाहिना हाथ बुरी तरह क्षत-विक्षत हो गया। बाघ के लिये परम स्वादिष्ट मानव-रक्त की प्रचण्ड धाराएँ गिरने लगीं। संत की भविष्यवाणी सत्य होने के आसार नजर आने लगे।

''इस प्रकार की गम्भीर चोट मुझे जीवन में पहली बार आयी थी, पर मैं तुरन्त उस से संभल गया। रक्तरंजित अँगुलियों को लंगोट में घुसाकर मैंने उन्हें छिपा लिया और बायें हाथ से एक हड्डी-तोड़ प्रहार बाघ पर किया। बाघ लड़खड़ाकर पीछे हट गया, पिंजरे के अंत तक पीछे गया, फिर पलटकर अत्यंत गुस्से के साथ पुनः मुझ पर झपटा। मेरे सुविख्यात मुष्टि शासन के प्रहार उसके सिर पर बरसने लगे।

''परन्तु राजाबेगम को रक्त का जो स्वाद लग गया था, उसने दीर्घकाल तक शराब से वंचित रहने वाले शराबी को जैसे शराब का पहला पूँट उन्मत्त कर देता है, उसी प्रकार उन्मत्त कर दिया था। बीचबीच में कान बैठा देनेवाली दहाड़े मारते हुए उसके आक्रमणों की उग्रता बढ़ती ही जा रही थी। उसके दाँतों और नखों के आगे मेरा केवल एक हाथ से बचाव करना अपर्याप्त पड़ रहा था और मेरी आत्मरक्षा प्रणाली ली अभेद्य नहीं रह पा रही थी। परन्तु मैं भी तिलमिलाने वाले प्रहार उस पर करता गया। दोनों ही रक्त रंजित होकर जीवन-मरण का युद्ध लड़ रहे थे। पिंजरे में कोलाहल था, चारों दिशाओं में रक्त के छींटे उड़ रहे थे, बाघ के गले से पीड़ा और खूनी प्राण-पिपासा के चीत्कार फूट रहे थे।

''गोली चलाओ ! बाघ को मार डालो !' दर्शक चीख रहे थे। मानव और पशु इतनी तेज गति से हिल रहे थे कि एक सिपाही की गोली भी निशाना चूक गयी। मैंने अपनी सारी संकल्पशक्ति एकत्र की और भीषण गर्जन के साथ उसके मस्तक पर एक अंतिम खोपड़ी-तोड़ प्रहार किया। बाघ गिर गया और ठण्डा होकर पड़ा रहा।

''पालतु बिल्ली की भाँति !'' मैं बीच में ही बोल पड़ा।

स्वामीजी खिलखिलाकर हँस पड़े, फिर उन्होंने तन्मय कर देने वाली अपनी कहानी को आगे बताना शुरू किया।

''आखिर राजाबेगम पराजित हो ही गया। उसका रहा सहा राज-गर्व भी चूर-चूर हो गया: अपने विदीर्ण, रक्त रंजित हाथों से मैंने उसका जबड़ा खोला और एक नाट्यपूर्ण क्षण के लिये उस खुले मृत्युद्वार में अपना सिर रखा। जंजीर के लिये इधर-उधर देखा और जमीन पर पड़े जजीरों के ढेर में से एक जंजीर खींचकर उससे बाघ की गर्दन पिंजरे की छड़ों के साथ बाँध दी। विजयोल्लास में मैं दरवाजे की ओर चलने लगा।

''परन्तु वह मूर्तिमान शैतान राजाबेगम ! उसकी कल्पित आसुरी उत्पत्ति के अनुरूप ही वह जीवट था ! एक ही विस्मयकारी झटके के साथ जंजीर तोड़कर वह मेरी पीठ पर झपट पड़ा। मेरा कंधा उसके जबड़े में फंसा हुआ था और ऐसी स्थिति में मैं जोर से नीचे गिरा। परन्तु पलक झपकते ही मैंने उसे अपने नीचे धर दबोचा। निष्ठर प्रहारों के आघातों से वह अर्द्ध-मूर्छित हो गया। इस बार मैंने उसे अधिक सावधानीपूर्वक बाँध दिया। धीरे-धीरे मैं पिंजरे से बाहर निकला।

''फिर से चारों तरफ चीख-पुकार सुनायी दी, इस बार वह हर्षोल्लास की थी। भीड़ की चीखा-पुकार की हर्षध्वनि जैसे एक ही विराट गले से निकल रही थी। मैं भीषण रूप से घायल तो हो गया था परन्तु फिर भी। द्वन्द्व की तीनों शर्ते पूरी कर दी थी - बाघ को अचेत करना, उसे जंजीर से बाँधना और बिना किसी प्रकार की सहायता लिये पिंजरे से बाहर आना। इसके अलावा मैंने उस हिंस्र पशु को इस तरह घायल और भयभीत कर दिया था कि मेरे सिर का अप्रतिम पुरस्कार अपने मुख में पाकर भी उसकी ओर उसने कोई ध्यान नहीं दिया !

मेरे घावों का प्राथमिक उपचार करने के बाद मेरा सम्मान किया और मुझे पुष्पहार पहनाये गये। मेरे चरणों में स्वर्ण मुहरों की वर्षा की गयी। असाधारण रूप से विशाल और वैसे ही क्रूर बाघ पर मेरी विजय की अन्तहीन चर्चाएँ चारों ओर से सुनायी दे रही थीं। ❖❖❖

क्रमशः अगले अंक में...

विरोधी शक्तियों का प्रतिरोध

वह (आश्रम से चले जाना) योग के दबाव के कारण नहीं परन्तु उनके अन्दर की किसी ऐसी वस्तु के दबाव के कारण होता है जो योग का निषेध करती है। यदि व्यक्ति अपनी चैत्य सत्ता और उच्चतर मानसिक पुकार का अनुसरण करे तो चाहे कितना ही योग का दबाव पड़े, उससे ऐसे परिणाम नहीं पैदा हो सकते। लोग ऐसी बातें करते हैं मानो योग में ऐसी अनिष्टकर शक्ति हो जो इन परिणामों को उत्पन्न करती हैं। बल्कि इसके विपरीत योग का प्रतिराध ही ऐसा करता है।

जब कोई प्रगति की जाती है तो वह प्राय: विरोधी शक्तियों को सक्रिय होने के लिये उकसा देती है, वे शक्तियाँ उसके प्रभावों को शक्तिभर कम करना चाहती हैं। जब तुम्हें इस प्रकार का कोई निर्णायक अनुभव हो जाय तो तुम्हें अपनी शक्तियों को इधर-उधर बिखेर देने और चेतना को किसी भी तरह से बहिर्मुख बनाने से बचते हुए अपने अन्दर केन्द्रित रहना चाहिये और प्रगति को आत्मसात् कर लेना चाहिये।

बहुधा एक अच्छी अनुभूति या निर्णायक प्रगति के बाद ही प्राणिक लोक की सत्ताएँ साधक पर आक्रमण करने और उसे डराने धमकाने की चेष्टा करती हैं। .....उन्हें हमेशा यह आशा रहती है कि वे साधक को आक्रमणों और धमकियों द्वारा उसके मार्ग से विमुख कर सकती हैं।

ऐसा प्राय: होता है। जब कोई प्रगति कर ली जाती है (यहाँ आन्तरिक दृष्टि का उद्घाटन है) तो विरोधी शक्तियाँ क्रोधान्ध होकर टूट पड़ती हैं। जब तुम प्रगति कर रहे होते हो तो विशेषकर तुम्हें अपनी रक्षा के लिये सावधान रहना होगा-जिससे आक्रमण के तुम्हारे अन्दर प्रवेश से पहले ही उसे रोक दिया जाय।

यह ठीक है। बाकी तो आक्रमण का बचा खुचा हिस्सा है--इस प्रकार का आकस्मिक और उग्र आक्रमण ऐसी चीज है जो वस्तुत: प्राय: तब होता है। जब साधक सीधे और खुले मार्ग की ओर पूरी तरह आगे बढ़ रहा होता है। वह साधक को प्रगति के मार्ग से स्थायी रूप से विचलित नहीं कर सकता, जब यह आक्रमण हट जाता है तब साधारणतया साधक को लक्ष्य की ओर अधिक दृढ़ता और तेजी से आगे बढ़ने का मौका मिल जाता है। हमें इस समय यही करना चाहिये।

स्वभावत: विरोधी शक्तियाँ उन वस्तुओं के यथा सम्भव अयिक-से-अधिक भाग का अपहरण करने की ताक में रहती हैं जिन्हें साधक उपलब्ध कर चुका है-यह नहीं कि इससे उन शक्तियों को कोई फायदा होता है परन्तु वे उन्हें इसलिये रोकती हैं कि जिससे उनका जीवन में भगवान् को मूर्तरूप देने के लिये उपयोग न हो।

प्रकाश की शक्तियों और विरोधी शक्तियों के बीच में हमेशा संग्राम चलता रहता है-जब कोई सच्ची क्रिया और, प्रगति होती है तो विरोधी शक्तियाँ उनके आड़े एक गलत क्रिया को फेंकने की चेष्टा करती हैं, जिससे प्रगति रुक जाय या मन्द पड़ जाय। कभी-कभी वे ऐसा तुम्हारे अन्दर उन पुरानी क्रियाओं को उभारकर करती है जिनमें अब भी लौटने की शक्ति है; कभी-कभी वे चेतना को विक्षुब्ध करने के लिये वातावरण में स्थित गतियों या विचारों का, अन्य लोगों द्वारा कही गई बातों का उपयोग करती हैं। जब भौतिक सत्ता में स्थिर शान्ति एवं शक्ति की क्रिया और सत्ता का आत्म-दान दृढ़ रूप से प्रतिष्ठित किया जा सके, तभी एक सुरक्षित आधार प्राप्त होता है -- तब इस प्रकार के उतारचढ़ाव और अधिक नहीं आते, यद्यपि उपरितलीय कठिनाइयाँ आती रह सकती या तो उच्चतर चेतना को प्राणिक या भौतिक भूमिका में उतरना होता है या फिर चैत्य चेतना के सामने आने पर व्यक्ति को देखना होता है कि प्राण में कौनसी न्यूनता है और उसका परित्याग करना होता है।

ऐसी विरोधी शक्तियाँ सदा ही रहती हैं, जो अनुभूति को रोकने या उसे भंग करने की चेष्टा करती हैं। यदि ये अन्दर आ जाये तो यह इस बात का चिह्न है कि प्राणिक या भौतिक सत्ता में कोई ऐसी चीज है जो या तो उनका प्रत्युत्तर देती है या इतनी जड़ है कि उनका विरोध नहीं कर सकती।

संदर्भ-श्री अरविन्द के पत्र भाग-3

क्रमश: अगले अंक में...

मनुष्य और विकास

मनुष्य के उत्तरोत्तर विकास के संबंध में श्री अरविन्द ने 'दिव्य जीवन' पुस्तक में विषद वर्णन किया है।

एक बार विकास की परिकल्पना को प्रस्तुत किया जाये और उसके समर्थक तथ्य सुव्यवस्थित कर दिये जायें तो **पार्थिव जीवन** का यह पहलू इतना स्पष्ट हो जाता है कि वह निर्विवाद-सा मालूम पड़ने लगता है। उस **यथार्थ यंत्र** को, जिसके द्वारा यह किया जाता है या सत्ता के प्ररूपों का ठीक-ठीक **वंश-वृक्ष** या उनके कालिक अनुक्रम को गौण माना जा सकता है।

यद्यपि अपने-आप में यह एक रुचिकर और महत्त्वपूर्ण प्रश्न है; जीवन के एक रूप का अपने पूर्ववर्ती कम विकसित रूप में से विकसित होना, स्वाभाविक चुनाव, जीवन के लिये संघर्ष, उपलब्ध विशिष्टताओं का बना रहना-इन सबको चाहे स्वीकार किया जाये या न किया जाये लेकिन अपने अंदर विकास योजना के साथ उत्तरोत्तर सृजन का तथ्य, ऐसा एकमात्र निष्कर्ष है। जिसका प्राथमिक महत्त्व है। दूसरा स्वतःसिद्ध निष्कर्ष यह है कि विकास में एक आवश्यक क्रम-शृंखला है, पहले जड़ पदार्थ का विकास, फिर जड़ में प्राण का विकास, फिर सप्राण जड़ में मन का विकास और इस अंतिम स्थिति में पशु का विकास जिसके पीछे-पीछे आता है **मानव विकास**।

क्रम की पहली तीन श्रेणियाँ इतनी स्पष्ट हैं कि उनके बारे में कोई विवाद नहीं हो सकता। विवाद इस बात पर हो सकता है कि क्या अनुक्रम में मनुष्य पशु के बाद आया या आरंभिक विकास साथ-साथ हुआ, लेकिन मन के विकास में मनुष्य, पशु के आगे निकल गया। एक परिकल्पना यह प्रस्तुत की गयी है कि **"मनुष्य अंतिम नहीं,"** पशु जाति में पहला और सबसे बड़ा है। मनुष्य की यह प्राथमिकता एक पुरानी कल्पना है, लेकिन यह व्यापक नहीं थी। यह मनुष्य के पार्थिव जीवों में स्पष्ट श्रेष्ठता के भाव से पैदा हुई है। **इस श्रेष्ठता का गौरव जन्म में** प्राथमिकता की माँग करता हुआ मालूम होता है; लेकिन विकसनशील तथ्य में श्रेष्ठ प्रकट होने में पहला नहीं पिछला होता है, कम विकसित, अधिक विकसित से पहले आता है और उसकी तैयारी करता है।

वस्तुतः जीवन में निचले रूपों की प्राथमिकता का विचार प्राचीन विचार में एकदम अनुपस्थित न था। सृष्टि के पौराणिक वर्णन के अतिरिक्त हम भारत के प्राचीन और मध्ययुगीन विचार में ऐसे कथन पाते हैं जो कालक्रम में मनुष्य पर पशु को प्राथमिकता देते हैं, और एक ऐसे अर्थ में जो आधुनिक विकास की कल्पना के साथ मेल खाता है। एक उपनिषद् घोषणा करता है कि अध्यात्म पुरुष या आत्मा ने जीवन-सृष्टि का निर्णय करने के बाद पहले गौ और घोड़े की पशु-जाति को रूप दिया। लेकिन देवताओं ने जो **उपनिषद्** के विचार में चेतना की शक्तियाँ और प्रकृति की शक्तियाँ हैं उन्हें अपर्याप्त वाहन पाया। अंत में आत्मा ने मनुष्य का रूप बनाया जिसे देवों ने अच्छी तरह बना हुआ और पर्याप्त पाया और उन्होंने अपनी वैश्व क्रियाओं के लिये उसमें प्रवेश किया।

यह अधिकाधिक विकसित रूपों में सृजन की स्पष्ट कथा है, **जब तक कि ऐसा रूप नहीं मिला जो विकसित चेतना का आवास हो सके।** पुराणों में कहा गया है कि काल में तामसिक पशु-सृष्टि हिली थी। चेतना और शक्ति की जड़ता के लिये भारतीय शब्द है-**तमस्**। मंद भौर निस्तेज और आलसी, अपनी क्रीड़ा में असमर्थ चेतना को तामसिक कहा जाता है। ऐसी शक्ति, प्राण-ऊर्जा जो आलसी और अपनी क्षमता में सीमित हो, सहज वृत्ति के आवेगों की संकीर्ण श्रेणियों से बंधी हो, विकास न करती हुई, आगे न बढ़नेवाली, विशालतर गतिज क्रियाओं या अधिक प्रकाशमय सचेतन क्रिया की ओर प्रेरित न होनेवाली हो उसे भी इसी श्रेणी में रखा जायेगा। पशु, जिसमें चेतना की यह कम विकसित शक्ति है, सृजन में पूर्ववर्ती है। अधिक विकसित मानव चेतना, जिसमें गतिशील मानस ऊर्जा की अधिक शक्ति और दर्शन का प्रकाश, है, परवर्ती सृजन है। तंत्र ऐसी आत्मा की बात कहता है जो अपनी स्थिति से पतित हो गयी है, वनस्पति और पशु-रूपों में लाखों जन्म लेने के बाद मानव स्तर पर आकर मुक्ति के लिये तैयार होती है।

❖❖❖

गतांक से आगे...

!! मेरे गुरुदेव !!

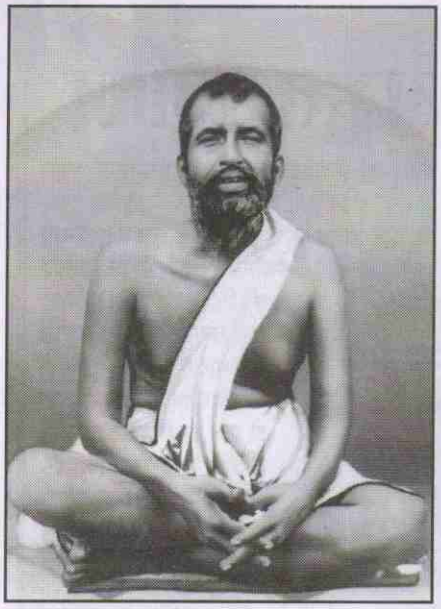

''महाराज, क्या आप ईश्वर में विश्वास करते हैं ?'' उन्होंने उत्तर दिया, ''हाँ।'' मैंने कहा, ''क्या आप सिद्ध करके दिखा सकते हैं ?'' उन्होंने उत्तर दिया, ''हाँ।'' मैंने कहा, ''कैसे ?'' उन्होंने उत्तर दिया, ''जैसे मैं तुम्हें यहाँ देख रहा हूँ, उसी प्रकार मैं ईश्वर को देखता हूँ...बल्कि उससे भी अधिक स्पष्ट रूप से।'' **इस उत्तर से मेरे मन पर उसी समय बड़ा असर पड़ा, क्योंकि जीवन में मुझे प्रथम बार ही यह ऐसा पुरुष मिला, जिसने तुरन्त ही यह कह दिया कि मैंने ईश्वर को देखा है** तथा जिसने यह भी बताया कि धर्म एक वास्तविक सत्य है, और जिस प्रकार हम अपनी इन्द्रियों द्वारा विश्व का अनुभव करते हैं, उससे कहीं अधिक प्रमाण में उसका अनुभव किया जा सकता है।

मैं उनके पास दिन-प्रतिदिन जाने लगा और मैंने यह प्रत्यक्ष अनुभव कर लिया कि धर्म भी दूसरे को दिया जा सकता है, केवल एक ही स्पर्श तथा एक ही दृष्टि में सारा जीवन बदला जा सकता है। मैंने महात्मा बुद्ध, ईसा मसीह आदि के बारे में एवं पुराणकालीन अन्य महात्माओं के विषय में पढ़ा है। वे किसी भी मनुष्य के सम्मुख खड़े होकर कह देते थे, **'तू पूर्णता को प्राप्त हो जा'** और वह मनुष्य उसी क्षण पूर्णता को प्राप्त हो जाता था। यह बात अब मुझे सत्य प्रतीत होने लगी और जब मैंने इन महापुरुष के स्वयं दर्शन कर लिये तो मेरी सारी नास्तिकता दूर हो गयी। मेरे गुरुदेव कहा करते थे, ''इस संसार की किसी भी-दी जानेवाली वस्तु की अपेक्षा धर्म अधिक आसानी से दिया तथा लिया जा सकता है।''

अतः प्रथम स्वयं तुम्हीं आत्मज्ञानी हो जाओ तथा संसार को कुछ देने योग्य बन जाओ और फिर संसार के सम्मुख देने के लिए खड़े होओ। धर्म बात करने की चीज नहीं है, न वह साम्प्रदायिकता है, न मतवाद विशेष। धर्म किसी सम्प्रदाय, अथवा संस्था में आबद्ध नहीं रह सकता।

यह तो आत्मा के साथ परमात्मा का सम्बन्ध है। अतएव किसी एक संस्था में बद्ध होकर यह कैसे रह सकता है ? ऐसा होने से धर्म तो व्यवसाय ही हो जायेगा और धर्म जब व्यवसाय बन जाता है, तब धर्म का लोप हो जाता है। मन्दिर तथा गिरजाघर बनवा देने तथा सामुदायिक पूजा में उपस्थित हो जाने का नाम धर्म नहीं है। यह पुस्तकों में, शब्दों में, व्याख्यानों में अथवा संस्थाओं में नहीं रहता। धर्म **आत्मसाक्षात्कार** में ही है। वास्तव में हम सब जानते हैं कि जब तक हमको स्वयं सत्य का ज्ञान प्राप्त नहीं होता, तब तक हमारा समाधान नहीं होता। हम चाहे जितना वाद-विवाद क्यों न करें तथा चाहे जितना सुनें, परन्तु हमें एक ही चीज से **सन्तोष** होगा और वह है स्वयं प्राप्त किया हुआ आत्मज्ञान और यह अनुभव प्रत्येक को प्राप्त होना सम्भव है, यदि उसके लिए यत्न किया जाय।

आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिए सबसे पहले त्याग की आवश्यकता है। जहाँ तक हो सके, हमें त्याग करना चाहिए। अन्धकार तथा प्रकाश, विषयानन्द तथा **ब्रह्मानन्द** ये दोनों कभी साथ साथ नहीं रह सकते। **'ईश्वर तथा शैतान की सेवा एक साथ कभी नहीं की जा सकती।'**

यदि लोग चाहते हों, तो उन्हें यत्न कर देखने दो। प्रत्येक देश में मैंने ऐसे बहुत से पुरुष देखे हैं, जो दोनों वस्तुएँ एक साथ पाने का यत्न करते हैं; परन्तु अन्त में उनके हाथ कुछ भी नहीं लगता। सत्य तो यही है कि ईश्वर के लिए प्रत्येक वस्तु का त्याग करना पड़ेगा। यह कार्य बड़े प्रयास का है और जल्दी नहीं हो सकता, परन्तु तुम इसे इसी घड़ी आरम्भ कर सकते हो। धीरे धीरे ही हम आगे बढ़ सकते हैं।

संदर्भ-विवेकानन्द साहित्य-7

क्रमशः अगले अंक में...

समाचारों की सुर्खियों में सिद्धयोग दर्शन

सिद्धयोग का अद्भुत कमाल

भास्कर संवाददाता | बाड़मेर

मैंने गुरुदेव सियाग से संजीवनी मंत्र सुनकर 15 मिनट ध्यान किया इस दौरान मुझे असीम शांति का एहसास हुआ । ये कहना था नीदरलैंड से आई दो विदेशी सैलानियों का। उन्होंने उतरलाई स्थित अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र में 15 मिनट तक साधना की। वे इन दिनों भारत भ्रमण पर आई हुई हैं और स्वयं टैक्सी ड्राइविंग कर बाड़मेर होते हुए जैसलमेर जा रही थी। बाड़मेर में उन्हें सिद्धयोग दर्शन की संपूर्ण जानकारी देकर 15 मिनट ध्यान कराया गया। उनका कहना था कि एक मंत्र और आध्यात्मिक गुरु के चित्र से ध्यान लगना बड़ा ही अद्भुत और पहली घटना है। मेरे जीवन में ऐसा अद्भुत आनंद कभी नहीं आया। ध्यान के दौरान रीढ़ की हड्डी में हल्का दर्द हो रहा था, जो परेशानी की बजाय आनंददायक था। ये कुंडलिनी जागरण का अद्भुत अनुभव था।

बाड़मेर आश्रम की तरफ से उनको अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, की पुस्तक विश्व में धार्मिक क्रांति भेंट की गई।

नवज्योति/बाड़मेर।

मैंने गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर 15 मिनट ध्यान किया और मुझे असीम आनंद के साथ, रीढ़ की हड्डी अर्थात् स्पाइनल कोड में दर्द महसूस हुआ। दूसरी साधिका ने कहा कि मुझे ध्यान के दौरान असीम शांति का एहसास हुआ जो मेरे जीवन काल में ऐसी शांति और आनंद कभी भी महसूस नहीं हुआ। ये कहना था यूरोपियन देश नीदरलैण्ड से आई दो विदेशी सैलानियों का।

सात समंदर पार से आए विदेशी सैलानियों ने अनुभूत किया गुरुदेव सियाग का सिद्धयोग

गुरुदेव सियाग आश्रम में प्रतिदिन लोग संजीवनी मंत्र जप के साथ ध्यान करने आते हैं। मंगलवार को आए विदेशी सैलानियों की कहानी बहुत ही रोचक और विज्ञान की कसौटी पर खरी उतरती हुई देखने में आई। यूरोपियन देश नीदरलैण्ड से भारत में घूमने के लिए आई दो महिलाओं ने दिल्ली से स्वयं टैक्सी कर बाड़मेर होते हुए, उन्हें जैसलमेर यात्रा पर जाना था। बाड़मेर में आने पर उन्होंने बाड़मेर शाखा सिद्धयोग आश्रम में फोन कर आश्रम आने का समय मांगा। बाड़मेर आश्रम में उनको सिद्धयोग दर्शन की संपूर्ण जानकारी देकर 15 मिनट ध्यान कराया गया। दोनों महिलाओं की सिद्धयोग दर्शन के प्रति विशेष रूचि थी। पहले उन्होंने पूरी बात बहुत ही गंभीरता पूर्वक सुनी, फिर उनको ध्यान की विधि बताकर 15 मिनट ध्यान कराया गया। ध्यान के थोड़े समय बाद स्वतः ही कुण्डलिनी जनित यौगिक क्रियाएं शुरू हो गई। 15 मिनट तक स्वतः ही योग होता रहा। फिर 15 मिनट बाद जब ध्यान खुला तो उनको इतना अद्भुत और विस्मयकारी लगा जो उनके चेहरे से साफ झलक था। अपने बिना किसी प्रयास के स्वतः क्रियाएं होना और वो भी अंदर की अदृश्य शक्ति द्वारा, यह बात उनके लिए बड़ी ही रोचक, अद्भुत और एक नई ही जानकारी थी जैसा कि उन्होंने बताया। ये कुंडलिनी जागरण का अद्भुत अनुभव था। बाड़मेर आश्रम की तरफ से उनको अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर से प्रकाशित अंग्रेजी पुस्तक विश्व में धार्मिक क्रांति भेंट की गई।

मकर संक्रांति पर सिद्धयोग कार्यक्रम आयोजित

नवज्योति/भोपालगढ़। मकर संक्रांति के पावन पर्व पर समर्थ सद्गुरुदेव रामलाल सियाग के सिद्धयोग का कार्यक्रम भोपालगढ़ ब्लॉक के गांव के राउमावि खेड़ी चारणा, राउप्रावि आमलियावास, राउप्रावि खेड़ी पूनियों की ढाणी, रामावि खेड़ी सालवा में रखा गया। जिसमें सैकड़ों विद्यार्थियों ने समर्थ सद्गुरुदेव रामलाल सियाग की तस्वीर से 15 मिनट का ध्यान करके दिव्य आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त किया। ध्यान के दौरान विद्यार्थियों को अनेक प्रकार की अनुभूतियां प्राप्त हुई तथा दिव्य आनंद की अनुभूति हुई। सिद्धयोग के द्वारा विद्यार्थियों की एकाग्रता व स्मरण शक्ति में अभूतपूर्व वृद्धि होती है। सिद्धयोग के द्वारा सभी प्रकार की शारीरिक व मानसिक बीमारियों से छुटकारा पाया जा सकता है।

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा–गंगापुर सिटी में बरसी पर्व मनाया गया तथा दर्जनों विद्यालयों में सिद्धयोग शिविर आयोजित किये गये। (जनवरी 2019)

बांसवाड़ा (राज.) व रतलाम (म.प्र.) के विभिन्न विद्यालयों में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन कर विद्यार्थियों को सिद्धयोग दर्शन की जानकारी देकर 15 मिनट ध्यान कराया गया। (दिसम्बर 2018)

रेवदर सिरोही : शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला में सिद्धयोग शिविर आयोजित। (28 दिसम्बर 2018)

संस्कृत कॉलेज, चौपासनी, जोधपुर में सिद्धयोग शिविर आयोजित। (27 दिसम्बर 2018)

भोपालगढ़ ब्लॉक के खेड़ी चारणा व अन्य विद्यालयों में सिद्धयोग शिविर आयेजित। (14 जनवरी 2019)

ध्यान योग केन्द्र खड़िया (कोटा) द्वारा विभिन्न विद्यालयों में सिद्धयोग शिविर आयोजित। (15 जनवरी 2019)

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा कोटा में बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी का बरसी पर्व मनाकर साधकों ने किया ध्यान। (1 जनवरी 2019)

ध्यान योग केन्द्र, खड़िया में बरसी पर्व मनाया गया। (1 जनवरी 2019)

www.the-comforter

चूरू जिले के विभिन्न विद्यालयों में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन (जनवरी 2019)

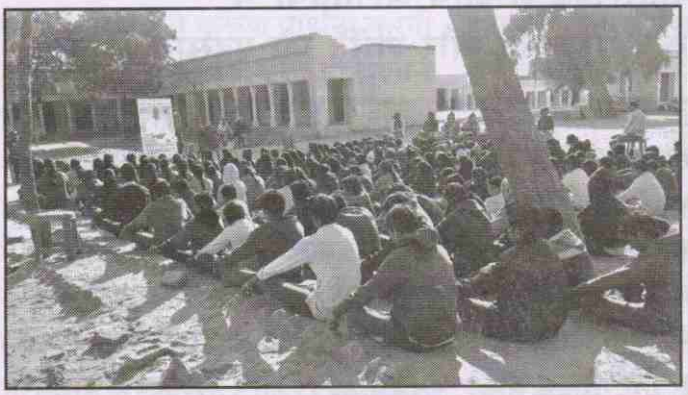

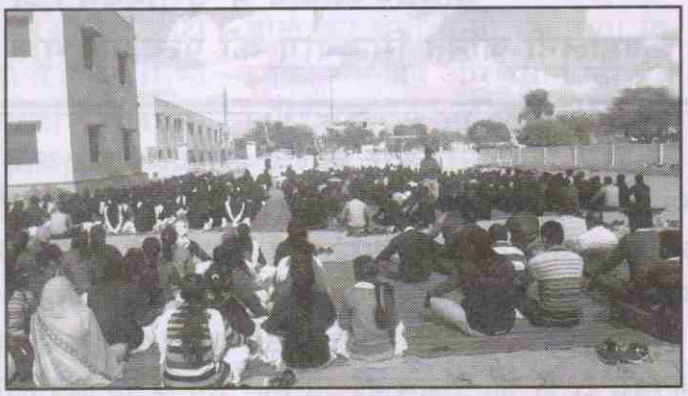

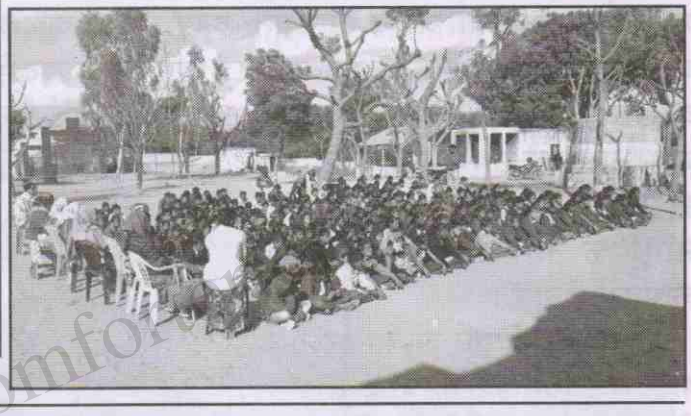

अश्विनी अस्पताल में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन (जनवरी 2019)

www.the-comforter.org

गुरुदेव के मिशन में भाषा बाधक नहीं

बाड़मेर आश्रम में यूरोपियन देश नीदरलैण्ड से आये सैलानियों ने कुण्डलिनी जनित सिद्धयोग की प्रत्यक्षानुभूति की, परमानंद और शांति का एहसास किया।

परम पिता परमेश्वर कल्कि भगवान् समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग साहेब के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन् नमन् प्रणाम्

बाड़मेर आश्रम में दिनांक 13 जनवरी 2019 को गुरुदेव की असीम कृपा से सामूहिक नाम जप व ध्यान के बाद गुरुभक्तों की सामूहिक बैठक में आश्रम की गतिविधियों एवम् प्रचार-प्रसार के संबंध में चर्चा हुई, जो हर महिने के द्वितीय रविवार को सामूहिक नाम जव व ध्यान का कार्यक्रम होता है।

इस दिन रविवार को सायं करीब 4:00 बजे गुरुभाईयों की बैठक सम्पन्न होने के बाद एक विदेशी महिला का कॉल मेरे फोन पर आया। उसने अपना नाम इमा क्रेमर, नीदरलैण्ड से बताया। मैं अचानक अचम्भित होकर गुरुदेव को याद करने लगा, फिर से वो मुझे दुबारा बोलती है कि आप बाड़मेर योगा क्लासेज सेन्टर से बोल रहे हो, फिर मैंने कहा हां। मेरे साथ गुरुभाई टीकमाराम जी खड़े थे, मैंने कहा आप इस अंग्रेजी महिला जो नीदरलैण्ड से है, उनको अंग्रेजी में गुरुदेव के दर्शन की जानकारी दीजिए। उन्होंने भी मेरी तरह कहा कि मुझे भी स्पष्ट अंग्रेजी बोलनी नहीं आती है, आप ही बात करो या अन्य से बात करवा दो। तब मैंने उन्हें कुछ समय के लिए इन्तजार करने को कहा और हम जब अपने-अपने घर चले गये तो रास्ते में मैंने बार-बार गुरुदेव से करूण प्रार्थना की। मैंने मन ही मन करूण प्रार्थना की कि हे गुरुदेव ! अब आप ही समझाने वाले हैं, मैं तो आपका यंत्र हूँ, आप ही इस आत्मा में आरूढ़ होकर, उनको आपका दर्शन समझाओ। ऐसी प्रार्थना के चलते, मेरे मन में गहन दृढ़ता आई और मन में यह ठान लिया कि गुरुदेव की कृपा से सब कुछ बताया जा सकता है। घर जाने के बाद मैंने गुरुदेव की कृपा से 30 मिनट तक बात की। वो मेरी बात अच्छी तरह से समझ गई थी, जो दूसरे दिन उसने मिलने पर बताया लेकिन मुझे बड़ा अफसोस हो रहा था कि अंग्रेजी हमें नहीं आती है। सही जवाब दे नहीं पाया। फिर मैंने उनको बोल दिया कि मैं आपकी, सिद्धयोग के सम्पूर्ण जानकारी के लिए, अंग्रेजी जानने वाले गुरूभाई से बात करके, आपको बाड़मेर आश्रम में आने का सही समय बताता हूँ। उसने धन्यवाद ज्ञापित किया, फिर मैंने अपने बाड़मेर से गुरूभाई तरंजन भादू को फोन किया और पूरी जानकारी बताकर अवगत करवाया और गुरुदेव की जानकारी देने के लिए कितने बजे उसे बाड़मेर आश्रम में बुलाया जाये, यह जानकारी माँगी गई तब उन्होंने कहा कि कल 14 जनवरी 2019 सायं 4:00 बजे बाड़मेर आश्रम पहुँच जायेंगे। आप विदेशी महिला को उसी समय बुला लेना।

मैंने गुरुभाई को निश्चित समय पर आने के लिए दुबारा फोन भी किया कि आप किसी भी स्थिति में समय पर आ जाना। विदेशी महिला को दूसरे दिन सायं 4.00 बजे आने का समय दिया। फिर दूसरे दिन विदेशी सैलानी का मैसेज आया कि आपके योगा सेन्टर का पता भेजें। मैंने उनको कुछ समय इन्तजार करने को कहा और मैं एक अन्य गुरुभाई के साथ बाड़मेर आश्रम पहुँचा और वहाँ से गूगल मैप (Google Map) के जरीये आश्रम का लोकेशन भेजा। उन्होंने तुरन्त मुझे

सन्देश भेजा कि हम लोग 20 मिनट में आपके पास पहुँच रहे हैं। मैंने भी धन्यवाद ज्ञापित किया। एक बार मन ही मन गुरुदेव से करूण प्रार्थना करनी शुरू की, **हे गुरुदेव !** आप ही बुलाने वाले, आप ही समझाने वाले, अब आप ही करूणा बरसाते रहना। गुरुदेव की कृपा से उसी वक्त अंग्रेजी सामग्री पेम्पलेट, एलबम, पुरानी एड्स एवं कैंसर रोगियों की फाइल, पुरानी लेबोरेट्री रिपोर्ट और गुरुदेव की **'विश्व में धार्मिक क्रान्ति'** (Religious Revolution in the World) वाली बुक मय टी.वी में भी अंग्रेजी में गुरुदेव की दिव्य आवाज वाला वीडियो लगाकर, गुरुदेव के प्रति तन्मय होकर बैठ गये।

उसी वक्त देखते हैं कि घड़ी में सायं 4:00 बजे का समय होने वाला है, और अभी तक अंग्रेजी भाषा के जानकार गुरुभाई तो आये नहीं, अब कौन समझाएगा, ऐसा विचार मन में चल ही रहा था, तब उसी वक्त एक लाल रंग की ऑटो आश्रम के दरवाजे से प्रांगण में प्रवेश करती हुई दिखी।

मैंने गुरुभाई को फोन किया कि वो महिला तो आ गई जल्दी आवो तो उन्होंने कहा कि कृप्या माफ करें मैं किसी वजह से विलम्बित हूँ। मैं एक घण्टे बाद आऊँगा। उस वक्त दो विदेशी सैलानी टेक्सी से उतर कर आश्रम के ध्यान कक्ष की ओर आने लगी। हमने गुरुदेव से बारम्बार प्रार्थना की। अब हम तो आपकी आवाज शुरू कर देंगे, आपकी आवाज से समझ पायें। हम तीन-चार गुरुभाईयों ने सामने जाकर उनका स्वागत किया और उनका परिचय लिया। मैंने उन्हे वेरी सॉरी कहा क्योंकि अंग्रेजी बोलने वाले गुरुभाई कुछ देरी से आएंगे। उसके बाद गुरुदेव की करूणामयी कृपा ने सब कुछ कर दिखाया। वे गुरुदेव के ध्यान कक्ष में आयी और विशेष रूप से गुरुदेव और बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी के फोटो को कई देर तक श्रद्धा से निहारा। तभी हमने गुरुदेव के अंग्रेजी पेम्पलेट से जानकारी देना शुरू किया। गुरुदेव के दर्शन की पूरी जानकारी अंग्रेजी में प्रदान की गई, वे दोनों महिलाएँ बड़ी गंभीर मुद्रा में हर बात को पूरी तरह से समझ रही थी, फिर उनको दो बार ध्यान की विधि बताई गई। फिर मैंने निवेदन किया आप पूरी तरह से समझ गये, उन्होंने कहा हां। फिर गुरुदेव की आवाज से

टी.वी. के माध्यम से ध्यान की विधि व गुरुदेव की आवाज का दीक्षा मंत्र वीडियो सुनाया गया। दीक्षा पेम्पलेट भी दिया गया, इसके बाद हमने पूछा क्या आप ध्यान की पूरी विधि समझ गये ? मेरे मन में एक शंका हुई कि शायद इनको गुरुदेव का दिव्य मन्त्र समझ में नहीं आया होगा ? तो मैंने उनको कहा कि आप एक बार मंत्र बोलकर बताओ तो उन्होंने मना कर दिया कि आपने बाहर बोलने का मना किया था, प्रथम बार में। फिर मैंने उनको बताया कि प्रथम बार गुरुदेव के आवाज में सुनने के बाद आप उनको बता सकती हो जो गुरुदेव से दीक्षित है, साथ बैठकर दीक्षा ली है। फिर उसने मंत्र बोल कर बताया तो हमें लगा कि इनको मंत्र जप और ध्यान की पूरी विधि समझ में आ गई है। तब तक दर्शन की जानकारी देते हुए 40 मिनट हो चुके थे। मैंने उन्हें ध्यान करने के लिए कहा, फिर उन्होंने गुरुदेव से 15 मिनट का समय माँगकर करूण प्रार्थना से गुरुदेव का ध्यान करना शुरू किया। कुछ समय बाद ध्यान के दौरान स्वतः ही हल्का योग होना शुरू हुआ, फिर ध्यान बढ़ता ही गया फिर 15 मिनट का समय पूरा हुआ। आँखे खुली तो एक महिला ने अपना अनुभव बताया की मेरी रीढ़ की हड्डी में अर्थात् **स्पाइनल कॉड** में दर्द हुआ और इम्मा क्रेमर को ध्यान के दौरान असीम शान्ति का एहसास हुआ जो उनके जीवन काल में ऐसी शन्ति और आनन्द कभी भी महसूस नहीं हुआ, उन्होंने ऐसा कहा। सद्बुद्धि गुरुदेव ही देते हैं, मेरे मन में विचार आया कि क्यों नहीं इनको इनकी राष्ट्रीय भाषा-डच में ही जानकारी दी जाय। गुगल ऐप भाषा परिवर्तन एप के माध्यम से उनको अपनी भाषा

www.the-comforter.org

नीदरलैण्ड की (डच) भाषा में उनको पूछा कि गुरुदेव के बारे में आप क्या कहना चाहती है ? उन्होंने कहा कि ऐसा पहली बार हुआ, मुझे बहुत अच्छा लगा सार्वजनिक हित के लिए, मेरे देश नीदरलैण्ड में सभी को जानकारी प्रदान करूँगी।

फिर हमने पूछा आपको मेरे मोबाइल नम्बर कहाँ से मिले तो वो बोली वेबसाइट (www.the-comforter.org) से मिले। फिर हमने पूछा कि आपको गुरुदेव और संस्था के बारे में कोई शंका है तो उन्होंने कहा हां। फिर कहा 'बाबा' शब्द का क्या अर्थ है ? हमारे वहाँ नीदरलैण्ड में मित्र को बाबा बोलते हैं। हमने बाबा श्री गंगाई नाथ जी महायोगी के बारे में सम्पूर्ण जानकारी दी, और यह सब उनकी भाषा में ही बताया गया।

लगभग 5:00 बजे गुरूभाई तरंजन जी आये। तभी उनको मैंने बताया अभी आपको एक बार अंग्रेजी में दुबारा जानकारी बताएंगे। करीब 10 मिनट जानकारी दी उन्होंने कहा यही बात इन्होंने हमको पहले बताई थी, हमें सिद्धयोग दर्शन की पूरी बात समझ में आ गई है। हमे अब वापस जाना है। कल हम लोग जैसलमेर जायेंगे तभी हमने पूछा कि आप जिज्ञासा रखती है तो कुछ फोटो सामग्री गुरुदेव के प्रचार के लिए आपको दे सकते हैं। तभी गुरुभाई ने अंग्रेजी में छपी पुस्तक देने का आग्रह किया लेकिन उसने लेने से मना कर दिया। फिर मैंने कहा जोधपुर मुख्यालय गुरुदेव के आश्रम से प्रकाशित है और हम आपको यह पुस्तक (विश्व में धार्मिक) भेंट करना चाहते हैं तो वो जोर से हंसी और पुस्तक ले ली और धन्यवाद ज्ञापित किया।

फिर खाड़ी होकर गुरुदेव के आसन पर नमन् कर आशीर्वाद लिया और नियमित ध्यान करने की बात कहकर चली गई।

उस दिन सद्गुरुदेव की करूण कृपा दृष्टि से समझ में आया कि गुरुदेव के इस महामिशन में निष्कपट भाव से, गुरु वचनों को ध्यान में रखते हुए, एकनिष्ठ होकर कार्य किया जाएँ तो भाषा बाधक नहीं बन सकती। बाद में मुझे महर्षि श्री अरविन्द आश्रम की श्रीमां की एक घटना याद आई जिसमें ऐसा ही कुछ घटा था जो मैं यहा हूबहू लिख रहा हूँ- ''माताजी ने थोड़ी-बहुत संस्कृत के सिवाय कोई और भारतीय भाषा नहीं सीखी थी, सीखने के लिये समय ही कहाँ था। एक दिन इन पंक्तियों के लेखाक को बहुत ही आश्चर्य हुआ, जब लगभग बीस-पच्चीस कन्नड़ लोग दौड़ते हुए उसके पास आये और उससे कहने लगे, **''आज माताजी ने हमारे साथ कन्नड़ में बात की।''** लेखक को इस बात पर विश्वास नहीं हुआ। उसे ठीक तरह मालूम था कि माताजी कन्नड़ नहीं जानती लेकिन जब इतने सारे लोग एक स्वर से माताजी का कहा हुआ वाक्य दोहरा रहे थे तो उन पर अविश्वास भी कैसे किया जाये ? उसने अवसर मिलते ही श्रीमां से पूछा।

श्रीमां ने कहा, ''दोनों की बात ठीक है। यह सच है कि मुझे कन्नड़ नहीं आती लेकिन यह भी सच है कि उन्हें मेरी बात कन्नड़ में सुनायी दी थी।

चेतना का एक स्तर होता है, जहाँ भाषाओं का भेंद नहीं होता। मैं जब उस स्तर पर जाकर बात करती हूँ तो सुनने वाला उसे अपनी भाषा में सुनता है। ये लोग कन्नड़ थे, उन्होंने मेरा वाक्य कन्नड़ में सुना। वे चीनी या जापानी होते तो अपनी भाषा में सुनते।''

इसी तरह की घटनाएँ हिन्दी तथा अन्य भाषाओं के साथ भी हुई थी।''

लेखाक श्री रवीन्द्र लिखित पुस्तक ''श्वेत कमल'' पृष्ठ-293 पर

इस घटना से मुझे अच्छी तरह से समझ में आ गया कि कोई भी समस्या हो यदि हम पूरी तरह से गुरुदेव से, **आंतरिक रूप से जुड़े हुए हैं तो समस्या का समाधान गुरुदेव ही करेंगे। हम बस यंत्रवत उनकी तरफ निहारते रहें।**

ये हमने बाड़मेर आश्रम में महसूस किया। गुरुदेव ने दिव्य रूपान्तरण की बात कही थी और अब ये विकास व आध्यात्मिक उत्थान का समय आता हुआ नजर आ रहा है। सात समन्दर पार से आई विदेशी सैलानियों ने नीदरलैण्ड से भारत आकर भी बाड़मेर में सिद्धयोग की जानकारी प्राप्त की। यह बड़ा ही विस्मयकारी और अद्भुत घटना थी।

एक बार बाड़मेर प्रवास के दौरान गुरुदेव ने कहा था कि यहाँ से सरस्वती नदी गुजरती है। इसका पता ध्यान के दौरान लगाया जा सकता है और जैनों के पार्श्वनाथ को नाथ सम्प्रदाय से बताया गया और विदेशियों के सम्पर्क के लिए जोधपुर मुख्यालय के सम्पर्क में रहने का आदेश दिया गया था। बाड़मेर आश्रम कश्मीरी शैविज्म दर्शन की बड़ी युनिवर्सिटी का शोध केन्द्र बनेगा। गुरुदेव की असीम कृपा से सब कुछ हो रहा है।

सद्गुरुदेव के सच्चे यंत्र बनकर ही इस महामिशन का कार्य कर सकते हैं।

-मूलाराम माली
श्री गंगाईनगर,
बाड़मेर (राज.)

www.the-comforter.org

उच्च रक्तचाप व अनिद्रा से मुक्ति

मैं ग्राम पुनायता, जिला पाली का निवासी हूँ। (आयु 39 वर्ष) अगस्त 1987 में अचानक बीमार हुआ। डॉक्टरों को दिखाने पर उच्च रक्तचाप बताया। दी गई दवाईयाँ लेता रहा, रक्तचाप भी कुछ कम हुआ पर मुझे उन दवाईयों से पूर्णरूप से कभी भी राहत महसूस नहीं हुई। लगभग दो वर्ष छह माह तक लगातार दवाईयाँ लेने के उपरांत भी दिन प्रतिदिन मेरा स्वास्थ्य गिरता गया। जीवन जीने की चाह धीरे धीरे समाप्त होती गई व मेरे मन में यह शंका हो गई थी कि जीवन कभी भी समाप्त हो सकता है।

मैं पूर्ण रूप से जीवन के प्रति निरुत्साहित हो चुका था। अप्रेल 1990 में मुझे मेघराज जी धीरदेसर, जोकि मेरे जीजा जी है, ने बीकानेर बुलाया। मुझे गुरुदेव के पास ले गये। गुरुदेव पधारे तब चरण स्पर्श कर सामने बैठ गया। कुछ देर बाद शरीर में कंप कंपी महसूस हुई व थोड़ी देर बाद शरीर में ठंडक व शांति महसूस हुई। उस दिन, रात को मैं बड़ी गहरी नींद सोया, जिससे कि मैं पिछले दो वर्षों से वंचित था। उस दिन के बाद, दूसरे गुरुवार को मैं गुरुदेव जी से दीक्षा ग्रहण कर, आज तक लगातार आराधना कर रहा हूँ।

मंत्र दीक्षा के लगभग एक माह बाद मेरे गाँव में ही एक दिन सुबह आराधना में बैठा था कि स्वतः ही शरीर घूमने लगा। जितना समय गुरुदेव से लेकर बैठा उतने समय में यौगिक मुद्राएँ हुई, समय पूरा होने पर उठा तो शरीर काफी हल्का महसूस हुआ। पर मन में शंका पैदा हुई तो बीकानेर गुरुदेव के पास पहुँचा। और सारी बातें गुरुदेव जी को बताई।

गुरुदेवजी ने एक पुस्तक में से वही भाग बताया जिसमें यौगिक क्रियाओं से संबंधित विवरण लिखा हुआ था। उन्हें पढ़कर व गुरुदेव के समझाने पर मैं पूर्णरूप से संतुष्ट हो गया। आराधना के समय मुझे असंख्य यौगिक क्रियाएँ हुई एवं चक्रों के भेदन की अनुभूतियाँ हुई। उन यौगिक क्रियाओं ने मेरे शरीर के सारे विकारों से मुक्ति दिला कर, शरीर का शोधन कर दिया। आज मै अपने आप को पूर्णरूप से स्वस्थ्य महसूस करता हूं। व किसी प्रकार का उच्च रक्तचाप नहीं है। गुरुदेव की कृपा से मैं पहला शिष्य हूँ जिसे सर्वप्रथम यौगिक क्रियाएँ हुई थी। दीक्षा के पश्चात् खान पान चिंतन व जीवन के हर क्षेत्र में विलक्षण परिवर्तन हुआ है।

इस प्रकार मैं बीमारियों व मुसीबतों के दलदल से निकलकर दिव्य आनन्द का अनुभव करते हुए परमात्मा की ओर अग्रसर हुआ। गुरुदेव ने मेरी दुनिया ही बदल दी है। सभी जिज्ञासु व्यक्तियों से मेरा निवेदन है कि समय रहते गुरुजी से दीक्षा प्राप्त कर, मनुष्य जीवन को सफल बनावें।

रतनसिंह राजपुरोहित
पटवारी बीकानेर
संदर्भ-राजकुल संदेश
सन् 1994

समाधि-परम्परा के अनुसार निर्विकल्प समाधि महज वह समाधि है, जहाँ से मनुष्य गर्म लोहे से दागने या आग से जलाने पर भी नहीं जग सकता-अर्थात् ऐसी समाधि जिसमें मनुष्य पूर्णरूप से शरीर से बाहर चला गया होता है।

अधिक वैज्ञानिक भाषा में कहा जा सकता है कि यह वह समाधि है जिसमें चेतना के अंदर कोई रचना या गति नहीं होती और योगी एक ऐसी स्थिति में खो जाता है, जहाँ से वह अनुभव का कोई विवरण नहीं ले आ सकता, महज यही कह सकता है कि वह आनंद में ऐसा था। ऐसा माना जाता है कि यह स्थिति सुषुप्ति या तुरीय में पूर्णतः लीन हो जाना है।

-श्री अरविन्द आश्रम की श्रीमां

कमर दर्द से मुक्ति

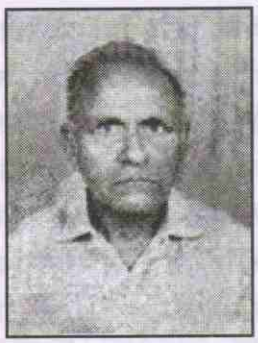

मुझे सन् 1986 से कमर में दर्द रहने लगा था। मैंने ई.एस.आई. डिस्पेन्सरी में डॉक्टर को दिखाया।

दर्द निवारण के लिए कैप्सूल दिये गये एवं कई बार इन्जेक्शन भी लगवाने पड़ते थे, परन्तु दर्द ठीक नहीं हुआ। मेरी कमर के नीचे के भाग में भार अत्यधिक बढ़ जाता एवं कमर के ऊपर का भाग भारहीन होना प्रतीत होता। इस कारण न तो साईकिल चला सकता और न ही सीधा बैठ सकता था। जीना बहुत ही दुभर हो गया था।

ई.एस.आई. डिस्पेन्सरी के डॉक्टर ने पी.बी.एम. अस्पताल, बीकानेर में दिखाने की सलाह दी। मैंने पी.बी.एम. अस्पताल में डॉक्टर को दिखाया वहीं दर्द निवारक केप्सूल, इन्जेक्शन एवं व्यायाम की सलाह दी गई। मैंने सभी दवाईयाँ ली लेकिन आराम नहीं मिला। यह बीमारी डॉक्टरों की समझ में नहीं आ रही थी।

मैंने सन् 1990 में परम पूज्य परम श्रद्धेय गुरु महाराज श्री रामलाल जी सियाग से दीक्षा ली। बीमारी से अत्यधिक परेशान हो जाने के कारण पूज्य गुरु महाराज द्वारा दिये गये मंत्र का जाप एवं ध्यान निरन्तर पूरी एकाग्रता से करने लगा।

सर्वप्रथम परम पूज्य गुरु महाराज जी की कृपा से ध्यान में मुझे विभिन्न प्रकार के आसनों में बैठने के संकेत मिलते थे और मैं उसी प्रकार बैठने का प्रयास करता। कुछ दिनों पश्चात मेरा पूरा शरीर हाथ, पैर, गर्दन, कमर अचानक बहुत तेजी से हिलने लगे। यौगिक क्रियाओं के होने से कमर का दर्द ठीक हो गया। अब बैठने में, साईकिल चलाने में कोई कठिनाई नहीं होती हैं। मैं पूर्णतः स्वस्थ हूँ।

यह एक दिव्य विज्ञान हैं। मेरा मत हैं कि केवल यह विज्ञान ही पूर्ण विज्ञान हैं। मेरे घर पर परम श्रद्धेय परम पूज्य गुरू महाराज श्री रामलाल जी सियाग की इस असीम कृपा से सब प्रसन्न हैं। मैं अब प्रातः नियमित नाम जप एवं ध्यान करता हूँ।

-तुलसीराम रावत
रावतों का मोहल्ला, नगर
परिषद के पीछे, बीकानेर
संदर्भ-राजकुल संदेश
सन् 1994

उच्च रक्तचाप से छुटकारा

मैंने सद्गुरुदेव जी श्री राम लाल जी सियाग से अगस्त 1990 में दीक्षा ली । दीक्षा से पहले मुझे उच्च रक्तचाप की बीमारी थी व मैं पूर्ण रुप से तामसिक था। मेरा वजन 125 किलो है। दीक्षा लेने के बाद शुरू के तीन दिनों में ही उच्च रक्तचाप की बीमारी समाप्त हो गई। मुझे आज तक पुनः उच्च रक्तचाप कभी नही हुआ।

अब मेरी वृत्तियाँ भी सात्विक हो गई है। यह सब गुरु कृपा का ही फल है। गुरु जी से मिलने से पहले मुझे आंतरिक डर (मृत्यु का भय) घर. व बाहर अशांति थी। गुरुदेव जी की कृपा से डर पूर्ण रूप से समाप्त हो गया तथा घर परिवार में पूर्ण रूप से शान्ति है। श्री गुरुदेव जी की कृपा से ठेकेदारी भी पहले से ज्यादा अच्छी चल रही है। मेरी सारी जिन्दगी उन्ही की कृपा से चल रही है। मेरे को इतनी खुशी है कि में उनका अहसान जिन्दगी भर नहीं उतार सकता हूँ।

-द्वारका प्रसाद आचार्य,
गोर्वमेंट कॉन्टेक्टर चौखूटी मोहल्ला,
रेल्वे फाटक के पास
बीकानेर
संदर्भ-राजकुल संदेश
सन् 1994

जयपुर में सिद्धयोग शिविर आयोजित

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केंद्र, जोधपुर की ओर से 13 जनवरी को मंदिर श्री गोविंद देवजी, जयपुर में निःशुल्क सिद्धयोग शिविर का आयोजन किया गया जिसमें सैकड़ों जिज्ञासु साधकों ने गुरुदेव के **''संजीवनी मंत्र''** की दीक्षा लेकर गुरुदेव की तस्वीर का ध्यान कर, मातृशक्ति **''कुंडलिनी''** जागरण का अनुभव किया।

शिविर का प्रचार-प्रसार कार्य 6 से 13 जनवरी तक चला जिसमें ए.वी.एस.के. जयपुर टीम के अलावा बहरोड, अलवर, पाली, नागौर, झुंझुनू, जालौर, गंगापुर सिटी, करौली, सवाई माधोपुर, बांदीकुई, दौसा, बालेसर, जोधपुर, गंगानगर, नारनौल, झज्जर, रोहतक, शहित देश के विभिन्न क्षेत्रों से आए साधकों की टीम ने पूरे जयपुर शहर में 8 दिन तक समर्पित भाव से गुरुदेव के **''सिद्धयोग''** दर्शन का प्रचार-प्रसार कार्य किया।

इस दौरान शहर के 50 विद्यालयों वह विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में लगभग 50,000 विद्यार्थियों को गुरुदेव के संजीवनी मंत्र से चेतन किया। इसके अलावा छात्रावास, मेडिकल कॉलेज, ऑफिसर ट्रेनिंग सेंटर, पार्क व जयपुर सेंट्रल जेल में गुरुदेव की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनाकर शक्तिपात दीक्षा दी गई।

प्रचार-प्रसार कार्य के दौरान गोविंद देवजी मंदिर, खोला हनुमान जी मंदिर, मोती डूंगरी गणेश जी, बिड़ला मंदिर, चांदपोल हनुमान जी में तथा 7 दिन तक एस.एम.एस. हॉस्पिटल जयपुर परिसर में सिद्धयोग प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसमें हजारों मरीजों व उनके परिजनों को गुरुदेव के सिद्ध योग दर्शन से लाभान्वित किया गया। प्रसार कार्य के दौरान गुरुदेव के मानव कल्याणकारी **दिव्य संदेश** को समाज के हर वर्ग तक पहुँचाने का हर संभव प्रयास किया गया।

-साधक
ए.वी.एस.के.
प्रचार टीम जयपुर

आत्मविश्वास-आत्मविश्वासहीनता का मतलब है ईश्वर में अविश्वास। क्या तुम्हें विश्वास है कि वही अनंत मंगलमय विधाता तुम्हारे भीतर से काम कर रहा है? यदि तुम ऐसा विश्वास करो कि वही सर्वव्यापी अन्तर्यामी प्रत्येक अणु-परमाणु में-तुम्हारे शरीर, मन और आत्मा में ओत-प्रोत है तो फिर क्या तुम कभी उत्साह से वंचित रह सकते हो?

-स्वामी विवेकानन्द, पुस्तक संदर्भ-विवेकानन्द वाणी पृष्ठ-178

सिद्धयोग में वर्णित संजीवनी मंत्र से

बीमारियों का ठीक होना

सर्वप्रथम पूज्य सद्गुरुदेव के श्री चरणों में कोटि-कोटि नमन्

मेरा नाम मिथलेश मीणा पुत्री श्री हंसराज मीणा, ग्राम-कालारेवा, पोस्ट-दहीखेड़ा, तहसील-खानपुर, जिला-झालावाड़ (राज.) की रहने वाली हूँ। मैं वर्ष 2009 से अचानक बीमार हो गयी। मुझे आये दिन बुखार, हाथ-पैरों में दर्द, सिर दर्द आदि होता रहता था।

भूख बिल्कुल नहीं लगती थी, शरीर बहुत कमजोर हो गया था। मैंने कोटा, झालावाड़ व अपने आस-पास के सभी डॉक्टरों से इलाज कराया लेकिन मैं ठीक नहीं हो पाई। फिर मार्च 2012 में मेरी सहेली के भाई मेरे घर आये और उन्होंने हमे गुरुदेव का मंत्र लेने की सलाह दी। वह स्वयं भी गुरुदेव का मंत्र जप व ध्यान करता था। गुरुदेव के **सिद्धयोग दर्शन** के बारे में बताता रहता था। उन्होंने मुझे भी गुरुदेव की दिव्य वाणी में **''संजीवनी मंत्र''** सुनाकर, 15 मिनट ध्यान करवाया।

शुरूआत के एक-दो दिन तो मुझे कुछ नहीं हुआ, फिर तीसरे दिन ध्यान किया तो बहुत जोर-जोर से **यौगिक क्रियाएँ स्वतः ही होने लगी**, मेरा सारा शरीर हल्का हो गया। धीरे-धीरे मेरा बुखार ठीक हो गया व बीमारी भी पूरी तरह से ठीक हो गयी। उसी वर्ष गुरुदेव की कृपा से 2012 वाली आर. पी.एस.सी. में मेरा सलेक्शन ही हो गया और इस प्रकार सद्गुरुदेव की ऐसी करूणा बरसी कि आध्यात्मिक व भौतिक दोनों ही रूप से मेरा परिवार संबल हो गया।

मेरी मम्मी वर्ष 2012 में, पोस्ट मेनोपोज प्रोब्लम से पीड़ित थी। उनको पीरियड्स आते तो कई दिनों तक चलते रहते, 15-15 दिन के अन्तराल में ही हो जाते हैं। एक बार ज्यादा ब्लडिंग (Blooding) होने पर उन्हें कोटा के शीला चौधरी मेटरनिटी होम लेकर गये जहाँ डॉक्टर ने जाँच के बाद बताया कि उनको बच्चेदानी में गाँठ है, जिसकी वजह से अनियमित पीरियड्स होते हैं और आपको शीघ्र ही इनका ऑपरेशन करवाना पड़ेगा।

इस बात पर मेरी माँ बहुत डर गई तो मैंने माँ से कहा कि **'आप चिंता मत करो, गुरुदेव सब ठीक करेंगे'** और मैंने पूरे दिन ध्यान के दौरान गुरुदेव ने मुझसे कहा कि **'तुम्हारी माँ मंत्र जप और ध्यान करेगी तभी ठीक होगा'** तो मैंने मम्मी को बता दिया और उन्होंने मंत्र दीक्षा लेकर ध्यान व जप करना शुरू किया।

दूसरे दिन सुबह उन्होंने ध्यान में देखा कि एक बाबा आया जिसके बड़ी-बड़ी जटाएँ हैं और उन्होंने अपने हाथ की त्रिशूल पेट के नीचले हिस्से में जोर से घोंप दी और उसमें से एक खोपड़ी त्रिशूल में फंसा कर ला रहे हैं और मुस्कराते हुए आशीर्वाद देकर चले गये। जब मेरी मम्मी ध्यान से उठकर बाहर आयी व हनुमान जी के मंदिर जाने लगी, वह लगभग सौ मीटर की दूरी तक ही चल पाई थी कि तीव्र ब्लडिंग (Blooding) के साथ पेट की गाँठ निकल कर नीचे गिर गई। मेरी मम्मी को चक्कर आ गये, वह थोड़ी देर वहीं बैठ गई। उसके बाद घर आकर हम सबको वह वाक्या और वह गाँठ बतायी उसके कुछ ही दिनों बाद माँ की ब्लडिंग पूर्णरूप से बन्द हो गयी और मासिक धर्म भी चला गया और आज वो पूर्ण रूप से स्वस्थ है। इससे यह बात सिद्ध होती है कि सद्गुरुदेव सियाग के सिद्धयोग में अद्भुत शक्ति हैं और मनुष्य मात्र को स्वस्थ जीवन और अपने कल्याण के लिए अपनाना चाहिए।

गुरुदेव की कृपा से ही हमारा बिखरा हुआ जीवन सँवरा है। अतः आप सब से भी यही अनुरोध है कि सिद्धयोग अपनायें व अपनों के जीवन में आध्यात्मिक व आत्मिक शान्ति का प्रत्यक्ष अनुभव करें और लोगों को भी ध्यान करने की राय दें। जय गुरुदेव

-मिथलेश मीणा
झालावाड़

www.the-comforter.org

सदगुरुदेव की कृपा प्रतिपल साथ में

सदगुरुदेव भगवान् अपने भक्तों पर कैसे कृपा की बरसात बरसाते हैं

सर्वप्रथम मैं अपने पूज्य सद्गुरुदेव भगवान् जो हमें बहुत याद आते हैं श्री रामलाल जी सियाग एवं दादा गुरुदेव श्री गंगाई नाथ जी योगी के चरण कमलों कि मैं बारंबार वंदना एवं नतमस्तक होकर प्रणाम करती हूँ। मेरे पास कोई शब्द तो नहीं है कि मैं उन शब्दों से मैं पूज्य सद्गुरुदेव भगवान की महिमा का बखान कर सकूँ लेकिन क्या करूँ हर समय उन्हीं की याद, उन्हीं का स्थान, मेरे मन में आए भावों को रोक नहीं सकती हूँ।

गुरु अपने शिष्य को दीक्षा जिस मंत्र से देते हैं, उसे बीज मंत्र करते हैं। उस बीज रूपी धन को शिष्यों को बहुत सावधानी से संभाल कर रखना होता है। बहुत लंबे अरसे से बड़ी मेहनत करके उस बीज रूपी धन से फल की प्राप्ति होती है क्योंकि गुरु से दीक्षित शिष्य उस बीज को उपयुक्त खाद मिट्टी में रोपित करेगा फिर उसे सिंचित करता रहेगा। थोड़े समय बाद जब बीज अंकुरित होगा तो हवा, पानी, प्रकाश की व्यवस्था करेगा तब वह अंकुरित बीज पौधे का रूप लेगा। फिर उस शिष्य को पौधे की रखवाली बड़े ध्यान से करनी पड़ेगी, उसे कीट पतंगे जीव जंतु नुकसान नहीं पहुंचाएँ। इसके लिए वह पौधे को ढककर रखेगा, उसको कांटा जाली से घेरकर रखेगा फिर जैसे-जैसे वह पौधा बड़ा होता जावेगा और पेड़ का आकार लेता जावेगा अंततः वह पेड़ बन ही जाएगा।

फिर तो उस पेड़ पर फल भी लगेंगे, उन फलों का अमृत वह शिष्य प्राप्त कर सकेगा, उस फलों का प्रसाद स्वयं भी लेकर भाग्यशाली बनेगा औरों को भी वितरित करेगा अर्थात् गुरु उस बीज के माध्यम से शिष्यों को रास्ता जरूर बता देते हैं, अब उस रास्ते पर शिष्य को गुरु के आदर्शों एवं नियमों को ध्यान में रखते हुए चलना होगा। अब रास्ता सुगम है या दुर्गम, आँधी है या तूफान, तपन है या ठिठुरन जो शिष्य अडिग होकर गुरु द्वारा बताए मार्ग पर चलता जावेगा निःसंदेह उसे मंजिल जरूर मिलेगी यानी बीज रूपी ज्ञान से पेड़ बनकर फलों के सुखों की प्राप्ति कर सकता है और जो इस रास्ते पर चलने में सक्षम नहीं होगा, वह अज्ञानियों की भीड़ में अपने आप को खड़ा नजर आएगा।

लेकिन बड़े भाग्यशाली होते हैं जिन्हें सदगुरुदेव की कृपा प्राप्त होती है। सदगुरुदेव की कृपा पाना सहज तो नहीं है लेकिन सदगुरुदेव की कृपा की नजर अगर किसी भक्त पर पड़ गई तो समझो व्यक्ति का जीवन धन्य हो गया और उसके आने वाली सात पीढ़ियाँ भी सदगुरुदेव की असीम कृपा रूपी अमृत का पान का आनंद ले सकेगी। क्योंकि सदगुरुदेव भगवान् तो अपने शिष्यों को फलों से लदा हरा भरा पेड़ ही शिष्यों को दे देते हैं। बस उस हरे भरे पेड़ से शिष्यों को फलों का आनंद प्राप्त करना है और उसका प्रसाद औरों को वितरित करते रहना है।

जिसने भी भगवान् सतगुरु देव की कृपा प्राप्त की है, उनके हर कर्म में सद्गुरुदेव साथ चलते हैं, रास्ते में जो भी कठिनाइयाँ आती हैं उसे सहजता से दूर करते हैं।

ऐसी ही कुछ बात विवेकानंद जी के साथ हुई, जब वे शिकागो में भारत की ओर से प्रतिनिधि बनकर गए और लाखों की तादात में जन समूह में उन्हें बोलने का अवसर मिला तो वे बिल्कुल भी ना घबराए, निडर होकर पूरे स्वाभिमान और आत्मविश्वास से बोलने लगे तो जन समूह में बैठे एक चित्रकार उनकी छवि को हुबहू बना रहा था, विवेकानंद जी का भाषण जैसे ही समाप्त हुआ तो चित्रकार आकर बोला हे महाराज ! मैंने आपकी छवि को हूबहू बनाकर आपकी छवि को संजीव बना दिया है। यह आपको भेंट करना चाहता हूँ। स्वामी ने उनकी कलाकारी का सम्मान किया, धन्यवाद ज्ञापित किया और चित्र को निहारने लगे। वे देखकर दंग रह गये कि जब वे बोल रहे तो उनके पीछे पूज्य गुरुदेव श्री रामकृष्ण परमहंस का ही आशीर्वाद था।

ऐसा लग रहा था मानो आपके बोलने चालने के हाव-भाव उसी छवि में से निकल रहे हैं। ध्यान से देखने के बाद उस परछाई को भी आपकी छवि के पीछे बना दी है। विवेकानंद जी ने उत्सुकता से उस छवि को दिखाने के लिए कहा तो चित्रकार ने उस छवि व परछाई को दिखा दिया, विवेकानंद जी के छवि में परछाई को देखाते ही जनसमूह के बीच जोर से उछल पड़े और कहा यह परछाई तो मेरे सद्गुरुदेव श्री रामकृष्ण परमहंस की है, तभी मैंने

सोचा कि मैं ऐसे धाराप्रवाह कैसे बोल रहा हूँ। यह भाषण तो मेरी ओर से नहीं, मेरे गुरुदेव की ओर से दिया जा रहा था, मेरे हर काम में मेरे सदगुरु देव का ही साथ हैं।

इसी प्रकार एक और भक्त था, वह बहुत बड़ा सेठ था। उसके पास भौतिक जीवन की सभी सुख सुविधाएँ थी। समाज में भी काफी अच्छी पहचान थी। सभी लोग जो भी मान्य निर्णय लेने होते, उस सेठजी के पास जाते थे। सेठ जी अपने गुरुदेव का नाम लेकर जो भी निर्णय करते थे, वह सही निकलता था। इसी कारण समाज में ही नहीं आसपास के गाँव, नगर, शहर आदि के लोग सेठजी से मिलने आते थे। सेठ जी उन लोगों से अपने सद्गुरुदेव की चर्चा करते, लोगों का खूब आदर सत्कार करते थे। सद्गुरुदेव के प्रति ऐसी निष्ठा और दया, करुणा, प्रेम और देवत्व गुणों की चर्चा दूर-दूर तक फैल चुकी थी। इतने बड़े सेठ जी इतना ऊँचा नाम होते हुए भी कोई घमण्ड की भावना नहीं थी, कभी बड़प्पन में नहीं रहे, कभी-कभी पैदल ही लोगों का हालचाल पूछने उनके दुःख दर्द की बातें करने निकल जाते थे। धीरे-धीरे समय बीतता गया, सेठ जी के जीवन में उतार चढ़ाव आने लगा, उनके व्यापार में दिनों-दिन घाटा होने लग गया। सगे संबंधियों ने उनका साथ छोड़ दिया, सब कुछ बदल गया लेकिन सेठ जी की सद्गुरुदेव के प्रति आस्था नहीं बदली।

वे जैसा घर में बनता, अपने सद्गुरुदेव का स्मरण कर भोग लगाने के बाद खुद भोजन करते। बस सद्गुरुदेव की याद और ध्यान इसके सिवाय कुछ नहीं। एक दिन सेठ जी ने ध्यान में सद्गुरुदेव जी से पूछा आप मेरे साथ हो तो यह कैसे पता चलेगा कि आप मेरे साथ हो, सद्गुरुदेव जी ने कहा तुम जब चलते हो तो तुम्हें अपने पद के दो चिह्न दिखाई देते हैं? सेठ जी ने कहा "हाँ, दो ही दिखाई देते हैं।"

सदगुरुदेव ने कहा "जिस दिन यह पद के चिह्न चार दिखाई दे तो समझना, मैं तुम्हारे साथ हूँ।" दूसरे दिन सेठ जी सद्गुरुदेव का स्मरण करते हुए सद्गुरु जी की समाधि के दर्शन करने जा रहे थे तो उन्होंने देखा कि दो की जगह चार पद चिह्न दिखाई दे रहे हैं। सेठ जी बहुत खुश हुए, उन्होंने सोचा दुनिया बदली तो क्या हुआ? सगे संबंधी रूठे तो क्या हुआ? व्यापार में घाटा लगा तो क्या हुआ? मेरे सद्गुरुदेव तो मेरे साथ है।

दिन बीत गए, साधक सेठ जी की हालत दिनोंदिन दूनी होती गई, सगे संबंधी उधारी माँगने के लिए घर तक आने लगे, सेठ जी कहते 'हाँ आपके पैसे जल्दी चुका देंगे, मेरे सद्गुरुदेव जो मेरे साथ है।' सेठ जी ने अपना जप-तप नहीं छोड़ा। एक दिन सेठ जी सद्गुरुदेव के दर्शन करने जा रहे थे तो क्या गजब हो गया आज तो सेठ जी को दो ही पद चिह्न दिखाई देने लगे। सेठ जी को अब तो बहुत गुस्सा आया, वे सद्गुरुदेव की समाधि पर पहुँचकर सद्गुरुदेव को उलाहना देने लगे, कहने लगे "इस दुःख की घड़ी में सगे संबंधियों ने तो साथ छोड़ा कोई बात नहीं लेकिन तुम ही मेरा साथ छोड़ दोगे, मुझे तुमसे ऐसी उम्मीद नहीं थी। खैर कोई बात नहीं तुमने मेरा साथ छोड़ा पर मैं तो तुझे नहीं भुला सकता।"

समय बीतता गया, साधक ने अपनी सद्गुरुदेव के प्रति आस्था कम नहीं होने दी। धीरे धीरे सेठ जी के वापस दिन बदलने लगे व्यापार बढ़ने लगा, धीरे-धीरे कर्जा उतरने लगा, सगे संबंधियों का वापस मिलाप होने लगा,

www.the-comforter.org

धीरे-धीरे सेठ जी पहले जैसे संपन्न हो गए, पर सेठ जी के व्यवहार में कोई फर्क नहीं पड़ा। एक दिन सेठ जी सुबह-सुबह सद्गुरुदेव के दर्शन के लिए जा रहे थे तो यह क्या? आज उसे वापस दो पद चिह्न की जगह चार पद चिह्न दिखाई देने लगे, अब तो सेठ जी के गुस्से का कोई ठिकाना नहीं रहा, उन्होंने सद्गुरुदेव से कहा "यह साथ होने का नाटक क्यों कर रहे हो?

जब मैं बहुत दुखी था, मेरा सब कुछ जा चुका था, तब तो तुम भी मेरा साथ छोड़ कर चले गए और स्थिति अब अच्छी हुई तो तुम वापस साथ हो लिए, क्या फर्क रह गया तुम्हारी भक्ति और दुनियादारी में?" ऐसे कह-कह कर साधक सद्गुरुदेव की समाधि पर फूट-फूट कर रोने लगा, कहने लगा **"अब तो मेरा घर जाने का ही मन नहीं कर रहा है तुमसे ऐसी उम्मीद नहीं थी प्रभु।"** साधु को रोते बिलखते देखकर सद्गुरुदेव ने समाधि में से साक्षात दर्शन दिए और कहा "क्यों रो रहा है प्रिय मैं तो हमेशा तुम्हारे साथ ही रहा हूँ।" इस पर साधक को और गुस्सा आया और कहा "प्रभु कहां साथ थे मेरे, मुझे तो पद चिह्न दो ही दिखाई दे रहे थे? जब मैं संकट की घड़ी में था और अब थोड़ी स्थिति अच्छी हुई तो चार पदों के चिह्न दिखा कर मेरे साथ होने का नाटक कर रहे हो।"

सद्गुरुदेव को साधक के भोलेपन पर दया आ गई, उस साधक के सिर पर प्यार से हाथ रख कर कहा। "मेरे प्यारे बच्चे जब तू संकट की घड़ी में था, चारों ओर से संकट ने तुझे घेर रखा था, तब तो तुम चलने की स्थिति में भी नहीं थे, तब मैंने तुम्हें अपनी गोद में उठा रखा था और तुम्हें जो दो पद चिह्न दिखाई दे रहे थे वे पद चिह्न मेरे ही थे, तुम तो मेरी गोद में थे तुम चल कैसे सकते है? आज समय फिर बदला और सब कुछ अच्छा हो रहा है तो तुम चल सकते हो, इसलिए मैंने तुम्हें गोद से उतार कर अपने साथ चलने के लिए तुम्हें समर्थ बनाया है।" साधु की आँखों में लगातार अश्रुधारा बह रही थी, सद्गुरुदेव साधक के सिर पर हाथ फेर कर फिर से अदृश्य हो जाते हैं। साधक कहने लगा हे! मेरे सद्गुरुदेव यह कैसी पागल प्रीत अपने भक्तों के साथ रखते हैं। भक्तों को कुछ पता ही नहीं, मेरे परम

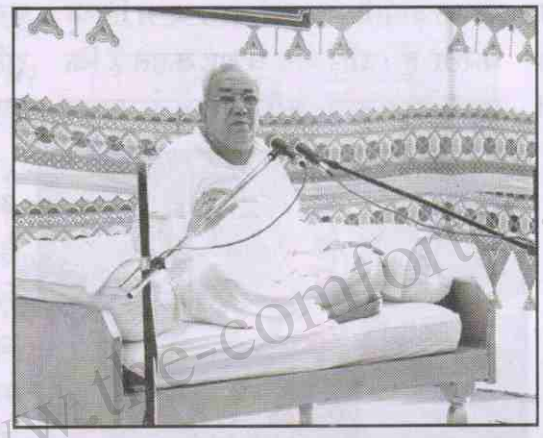

दयालु सद्गुरुदेव आपकी कृपा की बरसात हमेशा मेरे जीवन में होती रहे। मेरे सद्गुरुदेव अजर है, अमर है, दयालु है, करुणा के सागर हैं।

मेरे गुरु भक्त भाई-बहनों सद्गुरुदेव की तुलना हम किसी से कर ही नहीं सकते हैं। सद्गुरुदेव व्यक्ति नहीं व्यापक हैं। जिस प्रकार सूर्य की व्यापकता इस धरा पर रहने वाले समस्त मानव जीव-जंतु, पशु-पक्षी पर रहती है। सूर्य अपनी किरणों की छटा सभी पर बरसाते हैं। उसी प्रकार सद्गुरुदेव की कृपा में व्यापकता है। सद्गुरुदेव अपनी कृपा की बरसात सभी भक्तों पर बरसाते हैं सद्गुरुदेव के लिए कोई भी भक्त ना तो कोई विशिष्ट निकट है ना कोई कोसों दूर है, भक्त चाहे कोई गरीब या धनी, किसी भी जाति-धर्म-वंश से संबंधित हो कोई भी साधक श्री गुरुदेव के चरणो में गया उसने सद्गुरुदेव की कृपा का प्रसाद पाया ही है। उसका इह लोक और परलोक दोनों सुखी है।

मैं यह लेख लिखते हुए भाव विभोर हो रही हूँ, इसलिए उन्हें एक बार परम पूज्य समर्थ सद्गुरुदेव भगवान् के श्री चरणों में नतमस्तक हो रही हूँ।

सद्गुरुदेव भगवान् ने इस धरा पर **पार्थिव अमृत्व** का आनंद उतारकर मानव जाति को **दिव्य पथ** की ओर अग्रसर कर **संजीवनी बीज मंत्र** से मानव को महामानव बनाकर असीम शांति और नीरवता को मन मंदिर में उद्घाटित कर, परम धाम को सिधारे जरूर हैं, **पर उनके पद चिह्न हर सच्चे भक्त ों को दिखाई देते हैं।**

अब भला कोई इंसान इस दुनिया से चले जाने के बाद भी अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह कर सकता है क्या? नहीं, लेकिन हमारे सद्गुरुदेव हर एक सच्चे भक्त की जिम्मेदारी, एक पिता की तरह निभा रहे हैं दसवें कल्कि अवतारी समर्थ सद्गुरुदेव भगवान् श्री रामलाल जी सियाग जी ने जो संजीवनी मंत्र दिया है, उस संजीवनी मंत्र का गहनता से हमें जप करना है, सद्गुरुदेव के मिशन को आगे बढ़ाना है और अपने जीवन को भाग्यशाली बनाना है।

समर्थ सद्गुरुदेव भगवान् की जय

- सुशीला सेन
पुत्री श्री प्रेमाराम सेन
बनाड़ रोड़, जोधपुर

गतांक से आगे...

अवतार की संभावना और हेतु

''मूढ़ लोग मानुषी तनु में आश्रित मुझे तिरस्कृत करते हैं क्योंकि वे मेरे सर्वलोक महेश्वर परम भाव को नहीं जानते;'' और इन विचारों को सामने रखकर तब इस वचन का अभिप्राय निकालना होगा जो इस समय हमारे सामने है कि उनके दिव्य जन्म और दिव्य कर्म के ज्ञान द्वारा मनुष्य भगवान् के पास आता है और भगवन्मय होकर तथा उनका आश्रित होकर उनके भाव को प्राप्त होता है (मद्भावम्)।''

युक्तिवादियों का पक्ष यह है कि ईश्वर यदि है तो **विश्वातीत**, विश्व के परे है, संसार के मामलों में वह दखल नहीं देता, बल्कि संसार का अनुशासन एक सुनिश्चित विधान के बने-बनाये यंत्र के द्वारा होने देता है--यथार्थ में वह विश्व से दूर रहनेवाला कोई वैधानिक राजा सा या कोई जड़भरत सा आध्यात्मिक राजा है।

उसकी अधिक-से-अधिक प्रशंसा यही हो सकती है कि वह प्रकृति के पीछे रहनेवाला, सांख्यवर्णित साधारण और वस्तुनिरपेक्ष साक्षी पुरुष सा अकर्ता **आत्मतत्व** है; वह विशुद्ध आत्मा है, वह शरीर धारण नहीं कर सकता; वह अपरिच्छिन्न अनन्त है।

मनुष्य की तरह सांत परिच्छिन्न नहीं हो सकता; वह अजन्मा सृष्टिकर्ता है, संसार में जन्मा हुआ सृष्ट प्राणी नहीं हो सकता-ये बातें उसकी निरपेक्ष शक्ति मत्ता के लिए भी असंभव है। कट्टर द्वैतवादी इन बातों में अपनी तरफ से इतनी बात और जोड़ देगा कि ईश्वर है पर उनका स्वरूप, उनका कर्म और स्वभाव मनुष्य से भिन्न और पृथक् हैं; वे पूर्ण हैं और मनुष्य की अपूर्णता को अपने ऊपर नहीं ओढ़ सकते; अज अविनाशी साकार परमेश्वर मनुष्य नहीं बन सकते; सर्वलोकमहेश्वर प्रकृति से बंधे हुए मानवकर्म में और नाशवान् मानव-शरीर में सीमाबद्ध नहीं हो सकते। ये आक्षेप जो पहली नजर में बड़े प्रबल मालूम होते है, गीता के वक्ता, भगवान्, गुरु की दृष्टि के सामने मौजूद रहे होंगे। जब वे कहते हैं कि, यद्यपि मैं अपनी **आत्म-सत्ता** में अज हूँ, अव्यय हूँ, प्राणि मात्र का ईश्वर हूँ, फिर भी मैं अपनी प्रकृति का अधिष्ठान करके अपनी माया के द्वारा जन्म लिया करता हूँ ; और जब वे यह कहते हैं कि मूढ़ लोग मनुष्य-शरीर में होने के कारण

मुझे तुच्छ गिनते हैं, पर यथार्थ में अपनी **परमसत्ता** के अन्दर मैं प्राणिमात्र का ईश्वर हूँ, और यह कि मैं अपनी भागवत चेतना की क्रिया में चातुर्वर्ण्य का **स्रष्टा** हूँ तथा जगत् के कर्मों का कर्ता हूँ और यह होते हुए भी अपनी भागवत चेतना की **नीरवता** में, मैं अपनी प्रकृति के कर्मों का उदासीन साक्षी हूँ, क्योंकि मैं सदा कर्म और अकर्म दोनों के परे हूँ, परम प्रभु हूँ, पुरुषोत्तम हूँ। और इस तरह गीता **अवतार-तत्व** के विरुद्ध किये जानेवाले आक्षेपों का पूरा जवाब दे देती है और इन सब विरोधों का समन्वय करने में समर्थ होती है, क्योंकि ईश्वर और जगत् के सम्बन्ध में वेदान्त-शास्त्र के सिद्धान्त से गीता का आरम्भ होता है । वेदान्त की दृष्टि में ये आपातप्रबल आक्षेप प्रारम्भ से ही निस्सार और निरर्थक हैं। वेदान्त की योजना के लिए अवतार की भावना अनिवार्य नहीं है , पर फिर भी यह भावना उसमें सर्वथा युक्तियुक्त और **न्यायसंगत** धारणा के रूप में सहज भाव से आ जाती है।

यहाँ जो कुछ है सब ईश्वर, आत्मा, **एकमेवाद्वितीय** ब्रह्म ही तो है और ऐसी कोई चीज नहीं जो उससे भिन्न हो, कोई चीज हो ही नहीं सकती जो उससे इतर और भिन्न हो; प्रकृति भागवत चेतना की ही एक शक्ति होने के अतिरिक्त न कुछ है न हो सकती है ; सब प्राणी एक ही भागवत सत्ता के अन्तर और बाह्य, अहं और इदं, **जीवरूप** और **देहरूप** के अतिरिक्त न कुछ है न हो सकते हैं, ये उसी भागवत चेतना की शक्ति से उत्पन्न होते और उसी में स्थित रहते हैं, अनंत ईश्वर के सांत भाव को धारण करने के बारे में सवाल ही नहीं उठता, जब कि सारा जगत् उस अनन्त के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

इस समग्र विशाल जगत् में, जहाँ हम रहते हैं, हम जिधर दृष्टि उठाकर देखें, चाहे जैसे देखें, उसी को देखेंगे, और किसी को नहीं।

संदर्भ-श्री अरविन्द रचित **'गीता प्रबंध'** पुस्तक से

क्रमशः अगले अंक में...

दिव्य प्रेम

(अप्रैल १२, १६00 को सैन फ्रान्सिस्को क्षेत्र में दिया गया भाषण) विवेकानन्द साहित्य-भाग 3)

जिस क्षण मेरे सिर में दर्द होता है, मैं ईश्वर को भूल जाता हूँ। मैं शरीर हूँ। ईश्वर और प्रत्येक वस्तु को इस उच्चतम लक्ष्य के लिए, शरीर के लिए, नीचे आना चाहिए। इस दृष्टिकोण के अनुसार जब ईसा सलीब पर मरे और (अपनी सहायता के लिए) उन्होंने फरिश्तों को नहीं बुलाया तो वे मूर्ख थे। उन्हें फरिश्तों को बुला लेना चाहिए था और अपने को सलीब से उतरवा लेना चाहिए था ! पर **एक प्रेमी के दृष्टिकोण से**, जिसके लिए यह काया कुछ भी नहीं है, इस बकवास की ओर कौन ध्यान देता है ? इस आने-जानेवाले शरीर की चिन्ता क्यों ? इसका मूल्य कपड़े के उस टुकड़े से अधिक नहीं है, जिसके लिए रोम के सिपाही दाँव लगाते थे।

(सांसारिक दृष्टिकोण) और एक प्रेमी के दृष्टिकोण में बहुत बड़ा अन्तर है। **प्रेम करते जाओ**। यदि एक मनुष्य क्रोधित है तो कोई कारण नहीं है कि तुम क्रोधित हो; यदि कोई अपने को गिराता है तो कोई कारण नहीं है कि तुम अपने को गिराओ।..."मैं इसलिए क्रोधित क्यों होऊँ कि दूसरे मनुष्य ने मूर्खता का काम किया हैं। बुराई का विरोध न करो !" यह है, जो ईश्वर के प्रेमी कहते हैं। संसार जो करता है, संसार जहाँ जाता है, उसका (उन पर) कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

एक योगी को सिद्धियाँ प्राप्त हो गयी थीं। उसने कहा, "मेरी शक्ति देखो ! आकाश को देखो। मैं इसे बादलों से ढक दूँगा।" पानी बरसने लगा। (किसी ने) कहा, "स्वामी जी, आपने कमाल कर दिया। पर मुझे वह सिखा दीजिए, जिसको जानने के बाद कुछ और चाहने की मेरी इच्छा ही न रह जाय।"... शक्ति से भी छुटकारा पाना, कुछ न लेना, शक्ति न चाहना ! (इसका क्या अर्थ है) यह केवल बुद्धि से नहीं समझा जा सकता ।. ..तुम हजारों पुस्तकें पढ़कर नहीं समझ सकते । जब हम समझने लगते हैं तो समस्त संसार हमारे सामने खुल जाता है।...लड़की गुड़ियों से खेल रही है, उनके लिए सदा नये पति प्राप्त कर रही है; पर जब उसका असली पति आता है तो सब गुड़ियाँ (सदा के लिए) अलग कर दी जाती हैं। ... ऐसा ही यहाँ के सब कार्यों में होता है। (जब) प्रेम का सूर्य उदित होता है तो शक्ति और इन इच्छाओं के सभी क्रीड़ा-सूर्य अंतर्निहित हो जाते हैं। हम शक्ति का क्या करेंगे ? यदि तुम्हारे पास जो शक्ति है, उससे तुमको छुटकारा मिले तो ईश्वर को धन्यवाद दो। प्रेम आरम्भ करो। शक्ति (सिद्धियों) को जानना ही चाहिए। मेरे और ईश्वर के बीच मेरे के अतिरिक्त कुछ और नहीं रहना चाहिए। **ईश्वर केवल प्रेम है और कुछ नहीं** आरम्भ में प्रेम, मध्य में प्रेम और अन्त में प्रेम।

> **ईश्वर केवल प्रेम है और कुछ नहीं आरम्भ में प्रेम, मध्य में प्रेम और अन्त में प्रेम।**

एक रानी की कहानी (है), वह सड़कों पर (ईश्वर के प्रेम का) प्रचार करती थी। उसके क्रुद्ध पति ने उसे कष्ट दिये, देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक उसका पीछा किया गया। वह अपने (प्रेम का) वर्णन करते हुए गीत गाया करती थी। उसके गीत सब जगह गाये गये हैं। 'मैंने अपने आँसुओं से सींचकर (प्रेम की अमर बेल बोयी है) ..' यह अंतिम, महान् (लक्ष्य) है। इसके अतिरिक्त और क्या है ? (लोग) यह चाहते हैं, वह चाहते हैं। वे सब पाना और अपनाना चाहते हैं।

इसी कारण इतने कम (प्रेम को) समझते हैं, इतने कम इस तक आते हैं। उनको जगाओ और बताओ ! उन्हें कुछ अधिक संकेत मिलेंगे। प्रेम स्वयं अनादि, अनन्त बलिदान है। तुमको सब कुछ छोड़ देना होगा। तुम किसी वस्तु को अपना नहीं सकते। प्रेम को पाकर किसी दूसरी वस्तु की इच्छा नहीं होगी।..'केवल तू सदा के लिए मेरा प्रिय बन !' यह है, जो प्रेम चाहता है। मेरे प्रिय, उन अधरों का एक चुम्बन ! (उसके लिए) जो तेरे द्वारा चुम्बित हो गया है, सब दुःख मिट जाते हैं। एक बार तुझसे चुम्बित होने पर मनुष्य सुखी हो जाता है और अन्य सब वस्तुओं के प्रेम को भूल जाता है।

❖❖❖

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

ईश्वर के पाँच कार्य

"ईश्वर के पाँच कार्य हैं-सृष्टि, स्थिति, लय, तिरोधान और अनुग्रह। मतलब पहला-वो जीता है, फिर ढलती है-उम्र और फिर मर जाता है। इसमें पाँचवाँ काम गुरु करता है।

गुरु, साधक की वस्तु स्थिति से परिचित करा देता है। पाँचवें ज्ञान का दाता 'गुरु' होता है। इस प्रकार आप सब अपने आप में पूर्ण हो, मगर आपको तरीका नहीं बताया किसी ने-अंदर घुसने का।"

-समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342003
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

गतांक से आगे...

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

21 वीं सदी का भारत

तुम एक परिणाम को लक्ष्य बनाते हो और तुम्हारे प्रयास ऐसे हो जाते हैं जो उससे भिन्न या उल्टे परिणाम लाते हैं। शक्ति का आविर्भाव हुआ है और उसने लोगों में प्रवेश किया है।

मैं बहुत लम्बे समय से "इस" उत्थान की तैयारी करता आ रहा हूँ और अब "वह" समय आ गया है। अब मैं स्वयं ही इसे पूर्णता की ओर ले जाऊँगा।"

इस प्रकार गीता के चौथे अध्याय के 7वें तथा 8वें श्लोक में दिये वचन —

(यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥

"हे भारत! जब जब धर्म की हानि (और) अधर्म की वृद्धि होती है तब तब ही मैं अपने रूप को रचता हूँ अर्थात् प्रकट करता हूँ।

साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिए और दूषित कर्म करनेवालों का नाश करने के लिए (तथा) धर्म स्थापन करने के लिए युग युग में प्रकट होता हूँ)" के अनुसार 24 नवम्बर 1926 को भारत की पुण्य भूमि पर वह परमतत्व अवतरित हो गया।

इसी प्रकार के अवतरण की भविष्यवाणी बाइबल में यहोवा ने की है। यीशु ने तो उन्हें दोहराया है। बाइबल के यशायाह 46:10-11 में यहोवा ने घोषणा की है कि —

"मैं तो अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूँ, जो अब तक नहीं हुई है। मैं कहता हूँ, मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और मैं अपनी इच्छा को पूरी करूँगा। मैं पूर्व से एक उकाब पक्षी को अर्थात् दूर देश से अपनी युक्ति के पूरा करनेवाले पुरुष को बुलाता हूँ।

क्रमशः अगले अंक में...

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है?

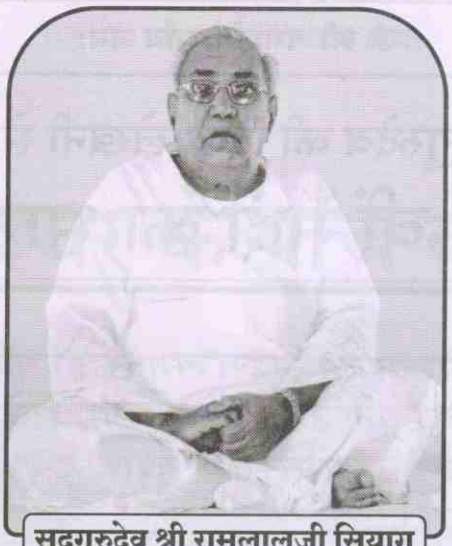

सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या?

ध्यान करके देखें।

▶ ध्यान की विधि ◀

गुरूदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें दो कार्य करने होते हैं। सघन नाम (मंत्र) जप व नियमित ध्यान।

आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से खुली आँखों से देखें। फिर आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं।) केन्द्रित कर, गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करुण प्रार्थना करें। अब गुरुदेव द्वारा दिये गए संजीवनी मंत्र का मानसिक रुप से सघन जाप करें। (बिना होंठ-जीभ हिलाए)। नाम जप ही ध्यान की चाबी (Key) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन मंत्र जप करें।

इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ये क्रियाएँ शारीरिक विकारों को ठीक करने के लिए होती हैं। ध्यान अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी। इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रुप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।

▶ Method of Meditation ◀

*Gurudev Siyag Siddha Yoga is an easy to do Spiritual Practise. It includes two things to be done by any seeker **'Mantra'** chanting and **'Meditation'**.*

Sit in a comfortable position. See gurudev's image for a while and now close your eyes and try to see Gurudev's image at the centre of your forehead and pray Gurudev for meditation of self for 15 minutes time.

Now mentally chant (without moving your **lips** and **tounge**) Sanjeewani Mantra given by Gurudev. Mantra Chanting is key for Meditation.

Yoga and meditation do not result without **Sanjeewani Mantra**

Chant it round the clock like endless chain of cycle.

During this time if you undergo automatic yogic exercises, then let it happen, don't try to stop them.

After requested time is over, they will stop and you will come in normal position.

Meditation in this way 15 minutes in the morning and evening with empty stomach.

For profound meditation, chant the mantra as much as you can while performing household tasks

www.the-comforter.org

शक्तिपात–दीक्षा

शक्तिपात दीक्षा एक महान् और दिव्य विज्ञान है जिसके द्वारा सिद्धगुरु अपनी दिव्य शक्ति को शिष्य में सीधे संप्रेषित कर, उसकी सुषुप्त शक्ति कुण्डलिनी को जाग्रत करते हैं।

गुरु शिष्य परम्परा में चार प्रकार से शक्तिपात दीक्षा का विधान है। स्पर्श द्वारा, दृष्टि द्वारा, संकल्प व शब्द (मंत्र) दीक्षा द्वारा।

- गुरुदेव का मंत्र चेतन (**Enlightened**) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।
- नाम जप ही चाबी (**Key**) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (**Round the Clock**) सघन जपो।

गुरुदेव की दिव्य आवाज में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें–07533006009

सभी जाति–धर्मों के जिज्ञासु स्त्री–पुरुषों को स्नेह निमंत्रण।

मुख्यालय : **अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र**

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342 003 सम्पर्क : 0291-2753699, 9784742595

E-mail : avsk@the-comforter.com | Web : www.the-comforter.org

जयपुर में सिद्धयोग ध्यान शिविर आयोजित। श्री गोविन्ददेव जी मन्दिर में सैकड़ों लोगों ने किया-संजीवनी मंत्र जप के साथ ध्यान। ध्यान के दौरान साधकों ने बताये अद्‌भुत अनुभव। (13 जनवरी 2019)

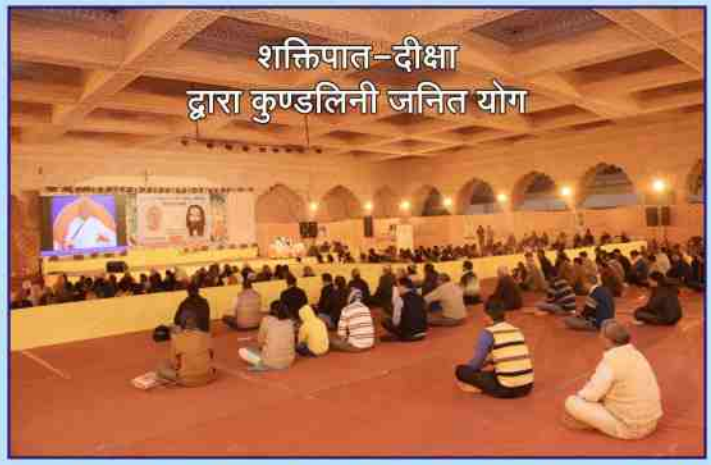

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365 * POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2017 & VALID UP TO 31.12.2019
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

बाड़मेर आश्रम : यूरोपियन देश नीदरलैण्ड से आई विदेशी सैलानियों ने गुरुदेव सियाग सिद्धयोग दर्शन की जानकारी प्राप्त कर संजीवनी मंत्र जप के साथ 15 मिनट ध्यान किया। कुण्डलिनी जनित सिद्धयोग में असीम शांति और आनंद का एहसास हुआ।

अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें
Spiritual Science • स्पिरिचुअल साइंस
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी
पोस्ट बॉक्स नं.41, जोधपुर (राज.) 342003 फोन: 0291-2753699, मो. : 9784742595

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान् _____

स्वत्वाधिकारी : अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए ताज प्रिण्टर्स, बोराणा हाऊस, जालोरी गेट के अन्दर, जोधपुर से केवल मुद्रित एवं अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित। सम्पादक – रामूराम चौधरी